ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 28 | अप्रैल -2026 | अंक - 04 | माउंट आबू | Rs.- 20

'एकता और विश्वास' के सूत्र देंगे महाराष्ट्रवासियों को आंतरिक शक्ति

- ब्रह्माकुमारीज़ ने 'महाराष्ट्र का स्वर्णिम भविष्य' अभियान किया आरंभ
- अभियान से समाज में आपसी समरसता और सदृढ़ होगी

नागपुर-जामठा(विश्व शांति सरोवर)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के जामठा,नागपुर विश्व शांति सरोवर से 'एकता और विश्वास के द्वारा महाराष्ट्र का स्वर्णिम भविष्य' अभियान में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि महाराष्ट्र देश में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास के उदाहरण प्रस्तुत करता रहा है। यह पवित्र भूमि राष्ट्र निर्माण की उन महान विचारधाराओं और आदर्शों की जन्मभूमि रही है, जिन्होंने भारतवासियों में नवचेतना का संचार किया। छत्रपति शिवाजी महाराज से लेकर महात्मा ज्योतिबा फुले, वासुदेव बलवंत फड़के, महर्षि धोंडो कर्वे, राजर्षि शाहू महाराज, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, विनायक दामोदर सावरकर और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे युगपुरुषों के चिंतन, संघर्ष और योगदान ने हमारे राष्ट्र को सशक्त बनाया है। उनके जीवन मूल्यों से मिली प्रेरणा आज भी हमें सही दिशा दिखाती है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का यह कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस कार्यक्रम से महाराष्ट्र के निवासियों को आंतरिक शक्ति, सकारात्मक नेतृत्व और मूल्य आधारित विकास की प्रेरणा मिलेगी।

अध्यात्म के माध्यम से सशक्त बनता है समाज

25 फरवरी को शाम की शुरूआती बेला में अपने हाथों शुरू किए इस अभियान के अवसर पर राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि अध्यात्म के माध्यम से लोग मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ बनते हैं। हानिकारक प्रवृत्तियों से मुक्ति, आपसी सौहार्द, नैतिक आचरण, आत्म-संयम, सकारात्मक सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व- ये सभी मिलकर समाज को सशक्त बनाते हैं।

जब ऐसे मूल्य जीवन का हिस्सा बनते हैं, तब स्वाभाविक रूप से समाज में विश्वास स्थापित होता है। आपसी विश्वास से समाज में सकारात्मक और सार्थक कार्यों को बढ़ावा मिलता है। मैं महाराष्ट्र की जनता को उनके परिश्रम, अनुशासन और राष्ट्र प्रेम के लिए नमन करती हूं। मुझे आशा है कि यह कार्यक्रम स्वर्णिम, सशक्त और समृद्ध महाराष्ट्र के निर्माण के लिए प्रेरणा देगा।

एकता और विश्वास पर खड़ा होता है शक्तिशाली राष्ट्र

एकता और विश्वास वे आधारशिलाएं हैं जिन पर एक शक्तिशाली राष्ट्र खड़ा होता है। जब समाज में आपसी भरोसा बढ़ता है, तो लोग व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर साझा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिलजुल कर काम करते हैं। आध्यात्मिक स्तर पर लोग करुणा, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान का भाव अपनाएं, तो समाज में सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार होता है। प्रत्येक नागरिक समानता को बढ़ावा देकर, भेदभाव को छोड़कर और सामुदायिक सेवाओं में भाग लेकर राष्ट्र निर्माण में प्रभावी योगदान दे सकता है। जब लोग एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं, तब विकास केवल सरकारी योजनाओं के बल पर ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सहभागिता के द्वारा तेजी से आगे बढ़ता है। यही भागीदारी हमें विकसित भारत के मार्ग पर आगे ले जाएगी।

समाज में एकता और विश्वास को सुदृढ़ करेगी यह पहल

भारत तभी सही अर्थों में विकसित कहलाएगा जब सबको आगे बढ़ने के समान अवसर मिलेंगे, टेक्नोलॉजी विकास का साधन बनेगी और प्रगति का लाभ घर-घर तक पहुंचेगा। संस्थान के ऐसे रचनात्मक और आध्यात्मिक परिवर्तन के कार्य से समाज में नई चेतना कार्य करेगी। इसलिए मैं ब्रह्माकुमारीज़ को इस प्रेरणादायक अभियान के लिए पुनः बधाई देती हूं। मुझे विश्वास है कि यह पहल समाज में एकता और विश्वास को सुदृढ़ करेगी। मैं इस अभियान की सफलता के लिए शुभकामनाएं और आप सबके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती हूं।

यह अभियान समरसता और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम बनेगा

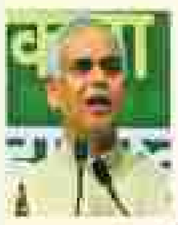

महाराष्ट्र के राज्यपाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाया जा रहा यह अभियान सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम बनेगा। मंत्री भावनकुले ने कहा कि राज्य सरकार समाज के ऐसे सकारात्मक अभियानों का स्वागत करती है, जो एकता और विश्वास को बढ़ावा देते हैं। माउंट आबू से आये राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, अतिरिक्त महासचिव ने संगठन की 90 वर्षों की सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का उद्देश्य मानवता में शांति, प्रेम और आत्मविश्वास का संचार करना है। वहीं, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, अहमदाबाद ने युवाओं से आह्वान किया कि वे इस अभियान से जुड़कर सकारात्मक परिवर्तन के वाहक बनें।

जब आत्मा हो संतुष्ट, तभी भाग्य है परफेक्ट

-राजयोगी ब्र.कु. [illegible]

आज के दौर में 'परफेक्ट भाग्य' की परिभाषा लगभग पूरी तरह बाहरी उपलब्धियों से जुड़ी हुई है। स्वस्थ शरीर, सफल करियर, आदर्श परिवार, सुंदर घर और आर्थिक सुरक्षा इन सबको हम सौभाग्य का पैमाना मानते हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या इन सबके होते हुए भी मन की अशांति हमें भाग्यशाली महसूस करने देती है? यदि भीतर संतोष नहीं, तो बाहर की परिपूर्णता भी अधूरी है।

वर्तमान समय अनिश्चितताओं से भरा है। परिस्थितियां पल-पल बदलती हैं। कभी स्वास्थ्य संकट, कभी आर्थिक उतार-चढ़ाव, कभी सामाजिक दबाव, जीवन का बाहरी परिदृश्य स्थिर नहीं है। ऐसे में यदि हम भाग्य को बाहरी कारकों से जोड़ेंगे, तो हमारी संतुष्टि भी अस्थायी ही रहेगी। बाहरी जगत हमारे पूर्ण नियंत्रण में नहीं, पर हमारा मन, हमारा दृष्टिकोण और हमारी प्रतिक्रिया ये पूर्णतः हमारे हाथ में हैं।

समस्या यह नहीं कि हम बेहतर जीवन चाहते हैं; समस्या यह है कि हमने 'बेहतर' को केवल भौतिक मानकों से परिभाषित कर दिया है। हम मान बैठते हैं कि सबकुछ परफेक्ट हो जाए, तब हम खुश रहेंगे। किंतु अनुभव बताता है कि जिनके पास सबकुछ है वे भी अक्सर और चाहिए की दौड़ में लगे रहते हैं। साधनों की प्रचुरता के बावजूद संतोष का अभाव उन्हें भीतर से खाली रखता है। इसके विपरित, सीमित संसाधनों के साथ भी कुछ लोग संतुष्ट और शांत दिखाई देते हैं। अंतर बाहरी वस्तुओं में नहीं, भीतरी स्थिति में है।

आज तुलना हमारी सबसे बड़ी मानसिक चुनौति बन चुकी है। सामाजिक मंचों और आभासी संसार में दूसरों के जीवन का चमकदार पक्ष देखकर हम अपने जीवन को कमतर आंकने लगते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हर व्यक्ति अपने संघर्षों से गुजर रहा है। तुलना का यह भाव हमारी आंतरिक ऊर्जा को क्षीण करता है और हमें कृतज्ञता से दूर ले जाता है।

यहीं 'शुक्रिया' का संस्कार महत्त्वपूर्ण हो जाता है। कृतज्ञता परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती; वह एक दृष्टिकोण है। यदि हम दिन की शुरुआत धन्यवाद से करें - अपने जीवन, अपने शरीर, अपने सम्बन्धों के प्रति, तो हमारा देखने का चश्मा बदल जाता है। शिकायत का भाव परफेक्ट परिस्थितियों में भी कमी खोज लेता है, जबकि कृतज्ञता अपूर्णता में भी सौंदर्य देख लेती है। इसके अतिरिक्त, जो लोग हमारे जीवन में चुनौति बनकर आते हैं, वे भी हमारे विकास का माध्यम हो सकते हैं। आलोचना, विरोध या असहमति हमारे भीतर की सहनशक्ति, धैर्य और विनम्रता को परखते हैं। यदि हम हर प्रतिक्रिया में अपनी शांति खो देते हैं, तो हम अपनी ही ऊर्जा गंवा बैठते हैं। किंतु यदि हम संतुलन बनाए रखें तो वही परिस्थितियाँ हमारे आंतरिक बल को सुदृढ़ करती हैं।

अतः समय आ गया है कि हम भाग्य की परिभाषा बदलें। परफेक्ट भाग्य का अर्थ यह नहीं कि सबकुछ हमारे अनुरुप हो; बल्कि यह कि हम हर परिस्थिति में संतुलित, संतुष्ट और सकारात्मक बने रहें। बाहरी संसार परिवर्तनशील है, पर मन को स्थिर बनाना संभव है। जब दृष्टिकोण बदलता है, तब जीवन की चुनौतियाँ भी अवसर में परिवर्तित हो जाती हैं। शायद सच्चा सौभाग्य इसी में है- लेने की नहीं देने की भावना में; शिकायत में नहीं, शुक्रिया में; तुलना में नहीं, आत्मचिंतन में। जब मन भरपूर होगा, तभी जीवन सच्चे अर्थों में परफेक्ट कहलाएगा।

ड्रामा के राज़ को यथार्थ समझने से हलचल में नहीं आयेंगे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

तीन बार ओमशान्ति कहने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। बाप भी याद आ गया, दादा भी और तीसरा ड्रामा भी। इस ड्रामा के ज्ञान के बिना भी हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, अचल, अडोल नहीं रह सकते हैं। कभी कोई भी ऐसा विघ्न आता है, पता नहीं मेरा आगे क्या पार्ट है? मैं चल सकूँगी या नहीं चल सकूँगी...। अभी तो मैजारिटी को निश्चय हो गया है कि हम ही थे, हम ही हैं और हम ही होंगे, यह पक्का है ना! जब संगठन में रहते हैं तो कई छोटी-मोटी बातें तो आती रहेंगी, कोई भी बात आवे, माया का काम है हिलाना। लेकिन मम्मा कहती थी, माया का काम देख करके आप अपना काम क्यों भूल जाते हो? हमारा काम क्या है? हिलना या माया को हिलाना? अभी हम सारे ड्रामा को जानते हैं, कभी भी कोई दिलशिकस्त हो तो ड्रामा को याद करे मैं थी, मैं हूँ और मैं ही बनूँगी, इसलिए बाबा ड्रामा को भी याद दिलाता है। कोई भी हलचल आवे तो हलचल में नहीं आना लेकिन ड्रामा के राज़ को समझ करके अचल हो जाना।

हम देवता हैं, यह पक्का है ना आपको? यह भूलना नहीं कि मैं देवता की आत्मा थी, अब चक्कर लगाके फिर वही बन रहे हैं, मनुष्य से देवता। तो इस नशे में रहने से मैं आत्मा हूँ, मैं फरिश्ता हूँ और फिर देवता हूँ। जो बाबा सिखाते हैं, बीच-बीच में उसका अभ्यास करते रहो तो कभी कोई भी खिटखिट हमारे सामने आएगी तो वह अभ्यास हमको हिलाएगा नहीं। अभी संस्कार का टक्कर जब होता है तो अवस्था बदल जाती है ना। देवता बनना है तो अपने संस्कारों के ऊपर ध्यान दो। तो यह सब बातें जो हैं वो हमारी परिवर्तन होनी चाहिए। तो संस्कार परिवर्तन के ऊपर आप सबका अटेन्शन है? बाबा ने कहा है फरिश्ते जैसे संस्कार, देवता जैसे संस्कार हमको धारण करने हैं, तो हमारी अवस्था सदा दिलखुश रहे और खुशी ही सबको बांटते रहें। टक्कर को भी खुशी में बदल दो, जिससे टक्कर हो उसे भी योग की किरणें दे करके बदलना है।

दादी जी के जीवन की विशेषता एक लाइन में सुनायें तो मैंने देखा कि बाबा का कहना और दादी का करना क्योंकि दादी ने बचपन से बाबा के मुख से जो निकला वो प्रैक्टिकल किया है। ड्रामा अनुसार चांस भी मिला है। समय प्रति समय जो बाबा के डायरेक्शन निकले, उस अनुसार दादी ने वह सेवा की है, यह दादी की स्पेशल विशेषता रही है।

लाइट बन लाइट की दुनिया में रहने का अभ्यास करो तो मैंपन स्वतः समाप्त हो जाएगा

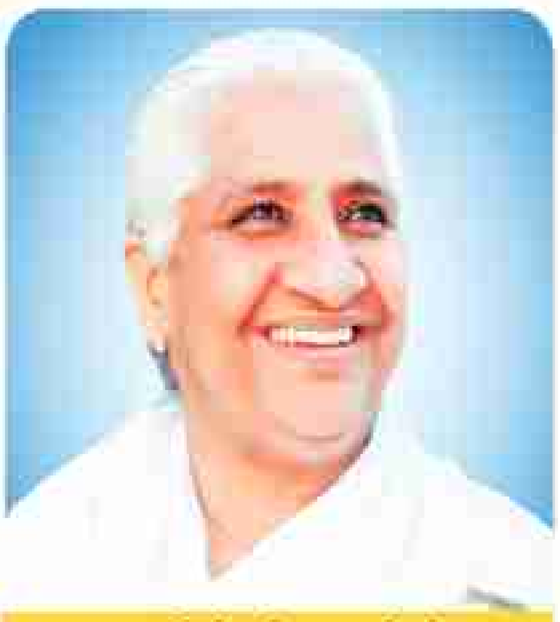
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा कहते मैं आया हूँ तुम बच्चों को अपने समान विदेही बनाने। दूसरा - बच्चे मैंपन को त्यागो। जहाँ मैं है उसे छोड़ बाबा-बाबा करो। हम निमित्त हैं। तीसरा - अपने कैरेक्टर्स पर ध्यान दो क्योंकि तुम्हें देवता बन स्वर्ग का मालिक बनना है। तो हर एक चेक करें कि हमारे मन में कहाँ तक शुद्ध संकल्प चलते हैं? कहाँ तक हम मन का मालिक राजा बन, मन वज़ीर को बाकायदे शुद्ध संकल्पों में, मनन चिंतन में रखते हैं? या मैं-मैं के देह अभिमान में व्यर्थ संकल्प चलते हैं? स्व के बदले पर को(दूसरे को) देखते, सोचते, संकल्प करते या ज्ञान सागर बाप के ज्ञान के खज़ाने का मनन करते हैं? मन के संकल्प सर्व प्राप्तियों में मगन रहते हैं? सर्व प्राप्तियों के खज़ानों को पाकर अपार खुशियों में रहते हैं?

मन के संकल्प पॉजिटिव चलते या निगेटिव चलते? हर प्रकार के निगेटिव थॉट्स को परिवर्तन कर पॉज़िटिव सोचो। जितना-जितना पॉज़िटिव सोचेंगे उतना मन की शुद्धि होती जाएगी, एकाग्रता बढ़ती जाएगी। पॉज़िटिव में भी स्व का चिंतन विशेष करना है। पर को देखने के बदली स्व को देखो। आप यह कभी नहीं सोचो कि मैं सेवाधारी हूँ, परन्तु आप ईश्वरीय सेवाधारी हैं। तो हमारा हर संकल्प, हर बोल, हर कदम सेवा में है या ईश्वरीय सेवा में है? यदि मैं सेवा में हूँ तो भी कहीं देह अभिमान या मैंपन आ जाता है। लेकिन मैं हूँ ही ईश्वरीय सेवा पर तो मेरा जो भी खाता है वह बाबा की दरबार में जमा है। तो हर एक अपना ईश्वरीय खाता चेक करो।

बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए हमें स्वयं में क्या धारणा करनी है? कई बार बाबा ने मुरली में कहा है तुम्हारा संकल्प, बोल, तुम्हारा चेहरा ही बाप का साक्षात्कार कराएगा। यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी बाबा ने हम सबको दी है कि तुम्हें बाप को प्रत्यक्ष करना है, उसके लिए खुद को देखो कि मैं बाप समान सम्पन्न बना हूँ? बाप समान सम्पन्न बनना माना ही सर्व विघ्नों से ऊपर निर्विघ्न अवस्था बनाना। सम्पन्न बनने का अर्थ है कि सर्व कमियों-कमज़ोरियों को समाप्त करना है। जैसे पढ़ाई में परीक्षा के दिन होते तो होशियार स्टूडेंट का लक्ष्य होता है कि मुझे फर्स्ट डिवीजन में पास होना है, पास विद ऑनर बनना है। जब हम पास विद ऑनर्स हों तब तो धर्मराज की सजाओं से मुक्त हों। धर्मराज बाबा हमारा स्वागत करे। बाबा हमें अपनी भुजाओं में वेलकम करे। बाबा कहे ओ मेरे समान बच्चे! आओ।

हर एक अपने आपको इतनी ऊंची दृष्टि से देखो कि बरोबर हम ऊपर में बाबा के साथ फरिश्तों की दुनिया में उड़ रहे हैं। नीचे में आकर, व्यक्तियों को देख व्यक्तित्व में अपना समय, शक्ति खर्च नहीं करो। यह बहुत बड़ी सूक्ष्म स्थिति बनाने की चैलेंज बाबा ने हमें दी है। कोई भी बात व्यक्त में आकर करेंगे तो जैसे पत्थर तोड़ेंगे लेकिन ऊपर से उड़ जाओ तो सभी बातें सहज ही क्रॉस हो जायेंगी माना निवारण हो जायेंगी। जितना भी टाइम साइलेन्स में बैठो उतना समय गहरा अनुभव करो कि हम इस देह से परे उड़ गये हैं। उड़ना माना विदेही बन फरिश्तों की दुनिया में पहुँच जाना। जितना लाइट बन लाइट की दुनिया में, फरिश्ते स्थिति में रहने का अभ्यास करेंगे उतना ऑटोमेटिक मैंपन निकल जायेगा। और जितना यह अभ्यास करेंगे उतना जो भी कोई कमज़ोरी होगी, अपवित्रता के संस्कार आदि जो भी कुछ है वह सब खत्म हो जायेंगे।

अभी सबको यही शुभ संकल्प करना है कि 1. मुझे बाबा के समान सम्पन्न फरिश्ता बनना है। 2. हमें इस विश्व की स्टेज पर अपने चलन, चेहरे, संकल्प, बोल से बाबा को प्रत्यक्ष करना है। हमारे वायब्रेशन ऐसे हों जो सभी कहें कि आप धन्य हैं। आप लोगों को भगवान ने ही पढ़ाया है और पढ़ा भी रहा है। यह संस्था देहधारियों की नहीं है, यह संस्था गुरु-चेलों की नहीं है परन्तु सभी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियां परमात्मा से पढ़ाई पढ़के परमात्म प्यार में लवलीन होने वाले हैं। हमें यह बहुत नशा है कि हम इस संगम पर कितने लक्की हैं, कितने महान भाग्यवान हैं जो वरदाता बाप ने हमें सर्व वरदानों से भरपूर किया है। लोग कृपा मांगते, हमें तो पल-पल कदम-कदम पर बाबा वरदानों से भरपूर कर रहा है। तो क्या यह दिल में नहीं आता कि हम ऐसा भरपूर बन, परम आनंद का अनुभव करें। हम प्रभु को अर्पण हैं। कोई पूछे तो हम छाती पर हाथ रखकर कहते हैं कि हमने परमात्मा को पाया है।

जो संतुष्ट हैं वे ही बाबा के कार्य में मददगार बनते

फालतू व्यर्थ ख्याल आपेही नहीं आते, इसे हम स्वयं पैदा करते हैं। एक व्यर्थ आया तो औरों को साथ ले आता है, जो सारी शक्ति छीन लेता है। बाबा से कनेक्शन टूट जाता है। फिर मुख से बाबा-बाबा भी नहीं कहते हैं, इतना तो माया गला घोट देती है इसलिए बाबा कहते हैं- खबरदार रहो। वाह बाबा! वाह ड्रामा! वाह रे मैं! ऐसा सच्चा पुरुषार्थ, तीव्र पुरुषार्थ, कन्टीन्यु होता रहे, अपनी स्थिति ऊंची एकरस बनाना - यह भी एक शान है। सदा साथ का अनुभव बहुत सुखी रखता है। वो फिर सदा अन्तर्मुखी रहता है। अगर मैं यहाँ सन्तुष्ट रहकर सबको सन्तुष्ट नहीं कर सकती हूँ, तो मैं बाबा की मददगार नहीं हूँ। सेंसिटिव नेचर वाला कभी सुखी नहीं रह सकता है, न ही कभी किसी को सुख देके सन्तुष्ट कर सकता है। तो सेन्सीबुल बन अपनी नेचर को बड़ा मीठा बनाओ। अपनी धारणा में मजबूत रहो जिससे कोई हमसे डिस्टर्ब न हो, न मैं कभी किसी से डिस्टर्ब हो जाऊं।

स्व-चिंतन और ईश्वरीय चिंतन में रहो। जैसा कर्म हम करते हैं और भी देखके वही करते हैं। तो जितना ज्ञान अति सूक्ष्म है, उतनी सूक्ष्म चेकिंग और चेंजिंग चाहिए। चेक किया चेंज हो गये, ऐसा ज्ञान कहता है। ज्ञान जो मिला वो जीवन में आया तो बाबा कहता है वाह बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह! अच्छा।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

अन्दर कोई भी लीकेज है तो योग लग नहीं सकता। शक्ति मिल नहीं सकती। आत्मा, परमात्म शक्ति खींचती रहे उसी आधार से आत्मा प्रकृति को चलाती रहे क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों को सतोप्रधान बनाना है। तो जैसे हमारा बाबा है, वैसे हमको करना है। किसी को देखकर कुछ नहीं करने का है। जो बाबा ने किया है वही करना है। ऐसा हमको बाबा का सपूत, लाडला, सिकीलधा बच्चा बनना है। जिसको जैसा बनना है वैसा ही चिंतन करना है। सारा दिन अपने चिंतन और भावना को देखो, दृष्टि में देखो एक बाबा ही बसता है! जैसे चित्रकार की बुद्धि में एक्यूरेट मूर्ति बनाने का रहता, वैसे बाबा हमारी मूर्ति बना रहा है। हर बात में फॉरगिव करना, फॉरगेट करना यह पुण्य कर्म है। किसी की कमी को अपने अन्दर रखेंगे तो हमारे अन्दर क्या चलता है वो स्पष्ट दिखाई देगा। लेकिन सच्चा पुरुषार्थी जो होता है वे अपनी कमी को निकालने की कोशिश करेगा, उसका वर्णन नहीं करेगा। दे दान छूटे ग्रहण। जिसमें जो कमी हो वो सहचारी दूर हो जाये। अपनी स्थिति में कोई विघ्न न पड़े। कोई मनमत पर चलता है, कुछ भी करता है... तो भी बाबा कभी यह नहीं कहेगा कि इसको यह सजा मिलनी चाहिए। वो माता, पिता, टीचर, सखा का पार्ट बजाता है। सतगुरू रूप से श्रीमत व डायरेक्शन भी देता है और सच्चा बच्चा, अच्छा बच्चा भी कहता है। अगर कोई भूल करके छिपाता है तो भी बाबा समझाएगा पर यह कभी नहीं कहेगा इसको सजा मिले। बाबा कहेगा यह मेरा काम नहीं है। माँ का काम, बाप का काम, शिक्षक का काम, सतगुरू का काम करता है, पर हर एक के कर्म के हिसाब-किताब में खुद नहीं जाता है। अपने को फ्री रखता है। शिवबाबा तो समय पर आके अपना पार्ट बजाके जाता है। बच्चों को नॉलेज देता है जो जितनी धारणा करते हैं वो उतना सुधर जाते हैं। हाँ, याद करते हैं तो उनके पाप नाश होते हैं। कर्मों की गुह्यगति समझाते हैं, परन्तु अच्छी तरह से ध्यान रखो कि ऐसा कोई भी काम नहीं करना जिससे सजा खानी पड़े। ध्यान से जो अमृतवेला करता है, मुरली सुनता है, बाबा उसमें बल भरता है।

याद माना क्या? हमको एक बाबा के सिवाए और कुछ याद न आये, हमारी याद ऐसी हो जो अवस्था परिपक्व हो। बाबा को याद करने से अवस्था मजबूत होती है। बात खत्म हो जाती है। चिंतन चलता ही नहीं है।

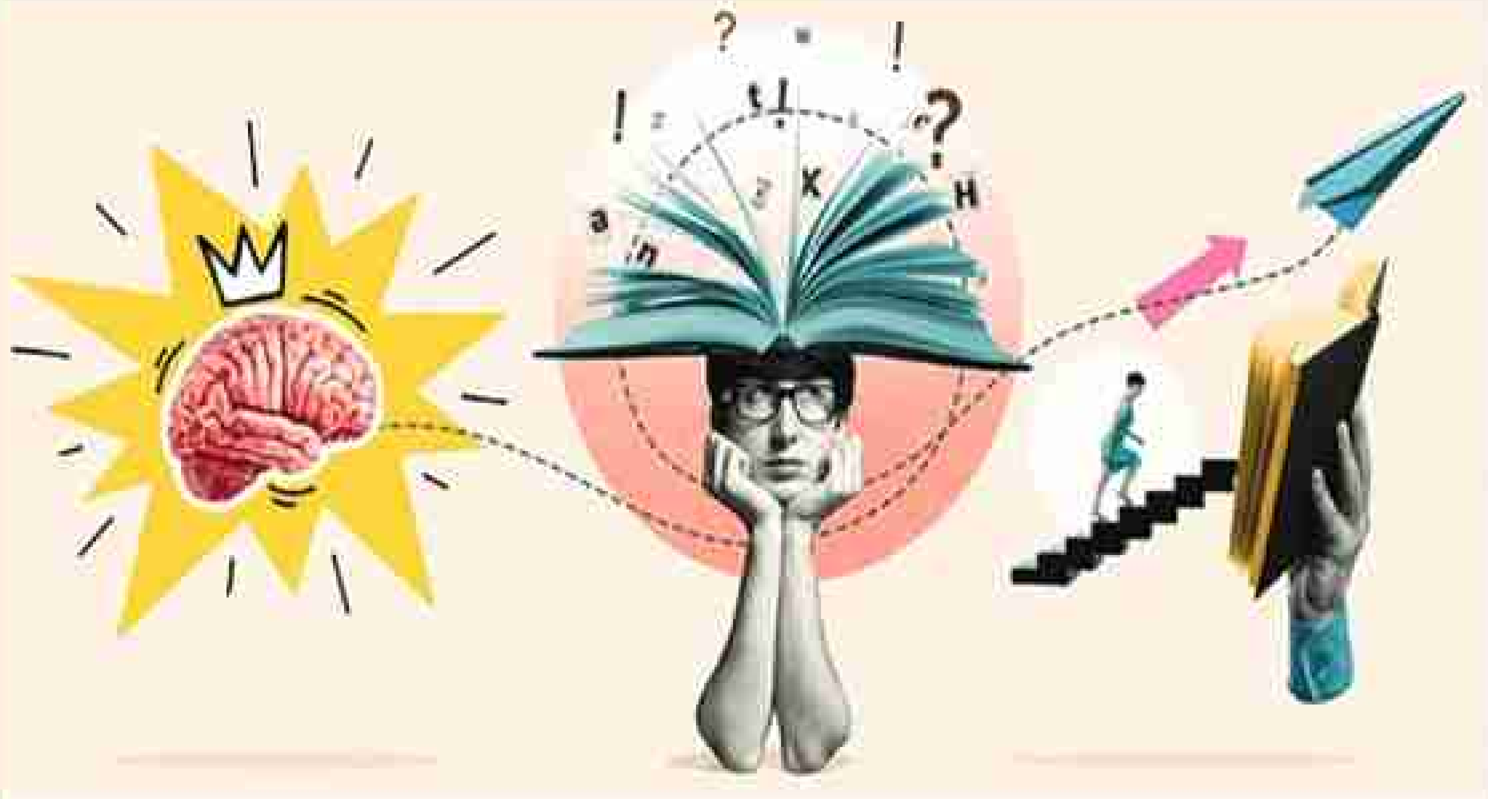

मन और बुद्धि की कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर कैसे बढ़ाएं?

आज के समय में सबसे सरल कार्य है - सलाह देना। हम बड़ी सहजता से कह देते हैं देश ऐसे चलना चाहिए, समाज वैसा होना चाहिए, परिवार को इस प्रकार सम्भालना चाहिए। परंतु प्रश्न यह है कि क्या हम स्वयं अपने घर के चारों लोगों को संतुलन और प्रेम से सम्भाल पा रहे हैं? जिस कार्य को हमने स्वयं किया ही नहीं, उस पर राय देना केवल शब्दों की खपत है। अनुभव से निकली हुई बात में शक्ति होती है, पर बिना अनुभव की सलाह केवल समय और ऊर्जा की बर्बादी बन जाती है।

सच्ची शक्ति 'रूलिंग पॉवर' और 'कन्ट्रोलिंग पॉवर' में है- अर्थात् स्वयं पर शासन करने की क्षमता। जब तक मन, वाणी और कर्मेन्द्रियों पर हमारा नियंत्रण नहीं होगा, तब तक हम परिवार, कार्यस्थल या समाज को सही दिशा नहीं दे सकते। स्वराज्य का अर्थ है- मैं अपने मुख का राजा हूँ या उसका गुलाम? यदि कोई प्रेम से आग्रह करे और हम केवल उसे प्रसन्न करने के लिए अपनी इच्छा शक्ति तोड़ दें, तो यह स्वराज्य नहीं, दासता है।

हम अक्सर यह सोचकर जीते हैं कि कहीं किसी को बुरा न लग जाए। दूसरों को खुश रखने की चिंता में हम अपनी मन की शांति खो देते हैं, अपनी आत्मिक शक्ति क्षीण कर देते हैं। पर यदि सचमुच दूसरों को प्रसन्न करने के लिए स्वयं को तोड़ देना ही सम्बन्धों को मजबूत बनाता, तो आज रिश्ते इतने कमज़ोर क्यों होते? छोटी-छोटी बातों पर लोग नाराज़ हो जाते हैं, संवाद बंद कर देते हैं, पुरानी बातें पकड़कर बैठ जाते हैं। यहाँ तक कि स्कूल के बच्चे भी अवसाद की बात कर रहे हैं। क्या यह सशक्त परिवारों की पहचान है?

वास्तव में हम जो कुछ करते हैं, वह केवल दूसरों के लिए नहीं, बल्कि अपने "टेस्ट" के कारण करते हैं- चाहे वह स्वाद का आकर्षण हो या किसी की कमज़ोरी सुनने का। हम कहते हैं, "उनकी वजह से किया," पर निर्णय हमारा अपना था। जीवन हमें तीन विकल्प देता है- राजा बनना, प्रजा बनना या गुलाम बनना। राजा वह है जो अपनी इंद्रियों और मन पर शासन करता है।

छोटी-छोटी आदतों से स्वराज्य की शुरुआत होती है। यदि हम भोजन में संयम रखते हैं तो वह केवल खाने पर नियंत्रण नहीं, बल्कि मन पर विजय का अभ्यास है। यदि हम किसी की बुराई सुनने से इनकार कर दें और स्पष्ट कहें- "मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं किसी की कमज़ोरी नहीं सुनूँगा"- तो यह आत्मबल की घोषणा है। हमारे शब्द किसी का भाग्य बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। इसलिए वाणी आशीर्वाद बने, आलोचना नहीं।

मौन इस साधना का प्रभावी माध्यम है। प्रतिदिन एक निश्चित समय विशेषकर प्रातःकाल मौन का अभ्यास करें। मौन से मुख पर नियंत्रण आता है और मुख पर नियंत्रण से मन पर। बिना नियंत्रण की गाड़ी दुर्घटना की ओर जाती है; उसी प्रकार अनियंत्रित वाणी और मन जीवन को अशांत कर देते हैं। यदि आवश्यक हो तो संकेत या लिखित माध्यम से कार्य करें, पर मुख को अनुशासित रखें। यही छोटी-छोटी साधनाएं इच्छाशक्ति को प्रबल बनाती हैं।

अंततः जीवन का लक्ष्य दूसरों को गलत तरीके से प्रसन्न करना नहीं, बल्कि स्वयं को सशक्त और पवित्र बनाना है। जो व्यक्ति जीते जी बेदाग रहता है, वही अंत समय भी हल्का और शांत हो जाता है। आज से संकल्प करें - हम अपने कर्मेन्द्रियों के राजा हैं। यही सच्चा स्वराज्य है, यही आत्मिक शक्ति का आधार है, और यही सफल, संतुलित और शांत जीवन का मार्ग है।

भोपाल-म.प्र.। माननीय राज्यपाल मंगू भाई पटेल एवं मुख्यमंत्री मोहन यादव से मुलाकात कर अभिनंदन करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज स्थापना के 90वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में भारत सरकार के केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को मोमेंटो भेंट करते हुए संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी। साथ है अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। 'सुखी पारिवारिक जीवन के लिए मूल्य' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित द्वारा शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, नेशनल कोऑर्डिनेटर, ब्रह्माकुमारीज वूमेन विंग चेअरपर्सन, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी, ब्रह्माकुमारीज वूमेन विंग नेशनल कोऑर्डिनेटर, माला सिंह, यामिनी सिंह, मनीषा रोहाणी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला दीदी तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।

बिलासपुर-छ.ग.। टेलीफोन एक्सचेंज रोड स्थित राजयोग भवन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति को उनकी उत्कृष्ट सामाजिक व आध्यात्मिक सेवाओं के लिए वैश्विक नेटवर्किंग और व्यवसाय वृद्धि संगठन बीएनआई में 'सीजी लाइफटाइम कंट्रीब्यूशन अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए जिला विधानसभा क्षेत्र के विधायक धरमलाल कौशिक व क्रेडा अध्यक्ष भूपेंद्र सवन्नी। साथ हैं बीएनआई मेला के अध्यक्ष किरणकमल सिंह चावला, मेला संयोजक गणेश अग्रवाल तथा अन्य गणमान्य व्यक्तिगण।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। 'संयम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' अभियान के अंतर्गत दिव्य दर्शन भवन में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए नगर महापौर प्रहलाद पटेल, मुख्यालय संयोजक, समाज सेवा प्रभाग ब्र.कु. बीरेंद्र, माउंट आबू, राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी, मोटिवेशनल स्पीकर एवं आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. दिलीप नलगे, पद्मश्री डॉ. लीला जोशी, उद्योगपति पुष्पराज सिंह, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता एवं भारतीय स्त्री शक्ति संगठन अध्यक्षा सविता तिवारी तथा अन्य समाजसेवी।

बिछावा-सट्टई(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करने के पश्चात समूह चित्र में पुखराज उप सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीतू, असाटी समाज महिला अध्यक्ष आदिती, एडवोकेट निकिता पाठक, आरएसएस कार्यकर्ता बाबूलाल जोशी, सोनी समाज अध्यक्ष अरुण सोनी व उपाध्यक्ष नरेश सोनी, पत्रकार बंधु प्रीति असाटी, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. रचना तथा अन्य।

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। महाशिवरात्रि पर्व पर परमपिता शिव परमात्मा के 100 फीट ऊंचे शिव ध्वजारोहण पर सम्बोधित करते हुए संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी। मौके पर अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, ज्ञानामृत पत्रिका के प्रधान सम्पादक राजयोगी ब्र.कु. आत्म प्रकाश, जापान सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी, रशिया सेंट पिटर्सबर्ग सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, मलेशिया सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मीरा दीदी, मॉस्को सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी एवं हजारों की संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. नलिनी दीदी के प्रथम पुण्य-स्मृति दिवस को 'मातृ-वात्सल्य दिवस' के रूप में मनाये जाने पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, आध्यात्मिक प्रेरक वक्ता ब्रह्माकुमारीज मीडिया एवं जनसंपर्क सेवा के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. निकुंज, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विश्वप्रिया। इस मौके पर 'जननी एंथम' का लोकार्पण भी किया गया।

नांदेड़-कैलाश नगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा कुसुम सभागृह में आयोजित 'खुशी या तनाव- स्वयं करें चुनाव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता एवं मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. ब्र.कु. शक्तिराज, माउंट आबू, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पद्मिकन्या, गोदावरी अर्बन बैंक की अध्यक्षा राजश्रीताई पाटिल, वसंत नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति, हिंगोली सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा, विधायक बालाजी कल्याणकर, विधायक आनंद बोंढारकर, उपजिलाधिकारी राजकुमार माने तथा पीएसआई अनिल पावंकर एवं अन्य।

सफलता के लिए स्वयं की सुनें... न कि दूसरों की...

राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

जहाँ दृढ़ता है, वहाँ सफलता है। दृढ़ता बहुत आवश्यक है। जीवन में कुछ भी हासिल करना हो तो सबसे पहले दृढ़ संकल्प अपने मन के अन्दर करने की आवश्यकता है। जितना हमारा लक्ष्य स्पष्ट होता है, मन के अन्दर दृढ़ संकल्प होता है तो पुरुषार्थ उसी दिशा के अन्दर बढ़ने लगता है और तब व्यक्ति कोई भी चीज़ को, असम्भव से असम्भव बात को भी सम्भव कर देता है। लेकिन आज की दुनिया ऐसी है कि जहाँ आपने कोई बात को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प किया तो कई लोग आपके मनोबल को हिलाने का प्रयत्न करेंगे, अरे छोड़ो! ये तो बहुत ऊंची बात है। ये प्राप्त करना तो असम्भव हो जाता है। तुम पहले अपना लक्ष्य नीचे का रखो। नीचे का रखेंगे तो पहले उसको प्राप्त करो, फिर उसको सीढ़ी बनाकर आगे बढ़ो।

तो पहली बात ये है कि जैसे ही दृढ़ संकल्प कोई बात का करते हैं तो सबसे पहले जो आवाज़ उठती है कि प्रोत्साहित करने के बजाए, उमंग-उत्साह को बढ़ाने के बजाए लोग मनोबल को तोड़ने का या हिलाने का प्रयत्न करते हैं और उस समय एक बहुत बड़ी कसौटी होती है व्यक्ति के जीवन में। क्या वो उनका सुने या अपने लक्ष्य पर पक्का रहे? क्योंकि अगर लक्ष्य पर पक्का रहा, दृढ़ संकल्प करके पुरुषार्थ आरम्भ किया तो एक न एक दिन उस लक्ष्य को प्राप्त करना ही है। क्योंकि कहा गया है दृढ़ता में सफलता है। और जब प्राप्त कर लेगा तो ज़रूर है सुख-शांति को अनुभव करेगा जीवन के अन्दर। लेकिन उस सुख-शांति तक पहुंचने के लिए कई लोग रास्ते में अनेक प्रकार की बातें सुनाते हुए हमारा हौसला कम करने का प्रयत्न करेंगे, ये नहीं हो सकेगा, ये असम्भव है, छोड़ दो। कुछ लोग ऐसे भी मिलेंगे कि अरे करो-करो हम तेरे साथ हैं। कुछ भी होगा हम आपके साथ खड़े हैं और अगर कोई आवश्यकता पड़ी तो मदद भी कर देंगे। लेकिन ये कहने वाले बहुत कम लोग होते हैं। जैसे ही उस यात्रा पर चले हिम्मत करके, तो कभी-कभी ये भी हो सकता है कि जिन्होंने आश्वासन दिया था और सोचा था कि ये कुछ करने वाला नहीं है हमें कहने में क्या जाता है, और जब वो करना आरम्भ कर देता है तो उस समय कहाँ गायब हो जाते हैं पता ही नहीं चलता है।

इसीलिए जीवन की इस राह के ऊपर आगे बढ़ने के लिए आवश्यकता है कि हम पहले से ही अपने मन के अन्दर इस बात को अच्छी तरह से ठान लें कि आगे का रास्ता कहीं न कहीं मुझे अकेले ही तय करके आगे बढ़ना है। जो इंसान दूसरों पर आधारित रहता है वो कभी सफल नहीं होता। क्योंकि आधार निकला तो वो भी जीवन में से हिम्मत हार के बैठ जाएगा। इसीलिए अगर जीवन में आगे बढ़ना है तो किसी को भी आधार मत बनाइए। व्यक्तियों को आधार मत बनाइए। आधार ज़रूरी है लेकिन कौन-सा आधार अपनाना है, मज़बूत आधार चाहिए तब उस मुकाम पर, उस मंज़िल पर पहुंचना आसान है। तो जीवन में भी कमज़ोरी का आधार कभी नहीं लो। कमज़ोरी माना कभी-कभी आलस्य, अलबेलापन, गलत संग, ये गलत आधार अगर लिया तो ये कमज़ोर आधार एक न एक दिन आपको तोड़ेगा। और तोड़ेगा तो नीचे गिरेंगे और चोट बहुत गहरी लगेगी। इसीलिए मज़बूत आधार हमें प्राप्त होता है, वैल्यूज़ से, मूल्यों से, जीवन के कुछ सिद्धान्तों से, ये हमें मज़बूत आधार देंगे। तो दूसरों का आधार लेने के बजाए हम अपनी ही जीवन के कुछ सिद्धान्त ऐसे बना दें। जीवन के अन्दर कुछ मूल्य ऐसे अपनाएं, जो मूल्य हमें अन्दर से ताकत देगा, शक्ति प्रदान करेगा, और उस शक्ति के आधार से मंज़िल तक पहुंचना आसान हो जाएगा। तभी मैंने कहा कि व्यक्तियों के आधार पर निर्भर नहीं रहना। आज हैं कल नहीं भी हैं। कल वो आधार निकल भी जाये लेकिन अपने ही सिद्धान्तों का आधार होगा, अपने ही मूल्यों का आधार होगा, अपने ही मज़बूत हौसले का आधार होगा तो वो कितना भी कोई तोड़ने का प्रयत्न करे जितना भी वो हिलाने का प्रयत्न करता है उतना और मज़बूती करता जाता है। और उस मंज़िल को हासिल करके ही रहते हैं। असम्भव को सम्भव करके दिखा देंगे। तो मज़बूत वैल्यूज़ का आधार लो। तब जीवन के अन्दर सफलता कोई बड़ी बात नहीं है।

रीवा-त्रिलिन्स(म.प्र.)। सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के शिलान्यास समारोह में माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव व उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला को ब्रह्माकुमारीज़ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा दीदी ने 'दिव्य गुणों की विशेष फुलवारी माला पहनाकर सम्मानित किया। साथ मंच पर सांसद जनार्दन मिश्रा, व्यंकटेश नगर निगम अध्यक्ष, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता, प्रबोध व्यास, पार्षद पूजा सिंह, पार्षद दीनानाथ वर्मा सहित अन्य गणमान्य अतिथि की उपस्थिति रही।

ब्यावरा-म.प्र.। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए माननीय नारायण सिंह पंवार,राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार,म.प्र. शासन, ब्र.कु. मधु,राजगढ़, पूर्व विधायक रामचंद्र दांगी, समाजसेवी डॉ. कैलाश मिश्रा, जनपद अध्यक्ष श्रीमती राधा देवी गुर्जर, वरिष्ठ एडवोकेट चंद्रकांत त्रिपाठी, बिजली विभाग के सहायक यंत्री रामेश्वर दांगी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी एवं अन्य अतिथिगण।

वाशी-नवी मुंबई(महा.)। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, उपमहापौर दशरथ भगत, पुलिस इंस्पेक्टर दीपक पाटिल, नवी मुंबई एयरपोर्ट सब इंस्पेक्टर सूरजभान, नगरसेवक निशांत भगत, व्यापारी संघ अध्यक्ष रोहिदास नखाते, माजी उपमहापौर भरत नखाते एवं डॉ.रतन राठौड़।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। महाशिवरात्रि पर्व पर राजिम कुंभ मेला में महानदी की गंगा आरती करने के पश्चात् चित्र में महामंडलेश्वर प्रज्ञा भारती, राजयोगी ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. पुष्पा दीदी तथा अन्य।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। पुलिस महानिरीक्षक, विसबल ग्वालियर रेंज, ग्वालियर के निर्देशन में 02री वाहिनी विसबल में 13वीं एवं 14वीं वाहिनी विसबल के अधिकारी व कर्मचारियों के लिए आयोजित विसबल रेंज स्तरीय नशा मुक्ति शिविर के पश्चात् समूह चित्र में उप महानिरीक्षक सेनानी राकेश सगर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, प्रेरक वक्ता ब्र.कु. प्रहलाद, बटालियन से यूनिट चिकित्सक डॉ. ओम प्रकाश वर्मा और एडजुटेंट पूनम शर्मा।

खजुराहो-म.प्र.। बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में ग्राम चंद्रनगर स्थित सर्वेश्वर धाम में स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के शुभारम्भ दौरान उपस्थित रहे स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या, ब्र.कु. कमला,छतरपुर, पुलिस प्रशासन अधिकारी राजेश दीक्षित व भाजपा मनीष तथा अन्य।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में त्रि-दिवसीय महाशिवरात्रि महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए घाटकोपर सबजोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया एवं जन संपर्क सेवाओं के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. निकुंज, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विष्णुप्रिया, मुंबई की नवनिर्वाचित महापौर रितु तावड़े, नगर सेवक एवं महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता भालचंद्र शिरसाट। कार्यक्रम में उपस्थित रहे भाजपा मुंबई के सचिव प्रवीण छेड़ा, भाजपा कुर्ला विधानसभा की अध्यक्ष विद्या गायकवाड़, एडवोकेट,मुख्य विधिक सलाहकार,महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण गांधी जी।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर दीप प्रज्वलन के दौरान भाजपा प्रमुख जयप्रकाश सोनी, भाजपा कार्यकर्ता जीवराज चौहान, नगरपालिका जागृति बहन काका, गणदेवीकर ज्वेलर्स के मालिक सुनील गणदेवीकर, सिटी कोषाध्यक्ष तेजस देसाई, वार्ड नं.-13 प्रमुख कुणाल सोनालकर, वार्ड नं.-13 महामंत्री मनोज सोलंकी व गोपाल गोहिल, उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी व अन्य अतिथिगण।

बेंगलुरु-कुमार पार्क(कर्नाटक)। महाशिवरात्रि पावन पर्व पर आयोजित 12ज्योतिर्लिंगम प्रदर्शनी का शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरोजा दीदी, श्री मालकल्ली विकमना चैरिटेबल ट्रस्ट कल्याण मंतपा प्रबंधक बालकृष्ण, कोडिगेहल्ली सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कलावती, जेपी नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. मीनाक्षी, ब्र.कु. सहना तथा अन्य।

महू-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'तनाव मुक्ति एवं मेडिटेशन अनुभूति शिविर' का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए तनाव मुक्ति विशेषज्ञ ब्र.कु. पूनम,इंदौर, सेंधवा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुनीता, न्यायमूर्ति उमेश चंद्र माहेश्वरी, उच्च न्यायालय कैंटोनमेंट सीईओ विकास कुमार, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष भारत सिंह ठाकुर एवं अन्य।

विदिशा-गुलाबगंज(म.प्र.)। महाशिवरात्रि पावन पर्व पर भाजपा के वरिष्ठ नेता राकेश कटारे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. रुक्मणी, ब्र.कु. नन्दनी एवं ब्र.कु. अनु।

पुणे-पिंपरी(महा.)। त्रि-दिवसीय 'शिव दर्शन ज्ञान मेला महोत्सव 2026' में सभा को संबोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा। मंचासीन हैं महाराष्ट्र विधानसभा उपाध्यक्ष अण्णा बनसोडे व उनकी धर्मपत्नी प्रियाताई बनसोडे, नगरसेवक संदीप वाघेरे, प्रियंका कुदळे, निकिता कदम और सामाजिक कार्यकर्ता बाळासाहेब वाघेरे तथा अन्य।

ब्र.कु. शिवानी बहन,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

दूसरों की कमियों को देखकर अपनी विशेषताएं न त्यागें...

अगर हम दूसरों के गुस्से के संस्कार को देखते रहेंगे और हम कहेंगे कि वो गुस्सा करते हैं- तो इससे सिर्फ उनका संस्कार नहीं बढ़ता, गुस्से का चिंतन कर-कर के हमारा भी संस्कार बढ़ जाता है। सबसे पहली चीज़ कि दूसरों के संस्कारों को कभी गलत नहीं कहना। दूसरी चीज कि उनके संस्कार का अपने मन में चिंतन नहीं करना। और तीसरी चीज, आत्मा पर चिंतन करना और सकारात्मक ऊर्जा प्रेषित करना। यानी दुआएं देना। हम दूर-दूर जाते हैं संत-महात्माओं के पास कि हमें आशीर्वाद दो, लेकिन हम खुद सारा दिन एक-दूसरे को क्या दे रहे हैं?

आपका हर विचार, हर शब्द ब्लेसिंग हो सकता है। लेकिन अगर ध्यान नहीं रखा तो हमारे विचार और शब्द दूसरों के लिए आशीर्वाद का विपरीत भी बन जाते हैं। और ऐसा करते-करते हमारे लिए निगेटिव सोचना आदत बन जाता है। पहली बात तो यह कि किसी का संस्कार गलत नहीं है। वो हमारे से अलग है। अपने नज़रिए से वो बिल्कुल सही हैं। हमें उनके अंदर जो संस्कार उभारना है, वही सोचना है। वो संस्कार उनके अंदर उभर आएगा।

अपेक्षा रखने का मतलब है ये चाहना कि लोग वो करें, जो मुझे सही लगता है। हम लोगों से अपेक्षाएं भी रखते हैं तो अपनी क्षमता से रखते हैं। जबकि अगर अपेक्षा रखनी है तो उनकी क्षमता से रखनी होगी। अगर किसी को खाना बनाना अच्छा लगता है और बहुत अच्छा खाना बनाने की उनकी क्षमता है और मैं उनके घर चली गई, तो मैंने तो उनसे नहीं बोला था पांच पकवान बनाने के लिए। उन्होंने अपनी क्षमता से बनाए। हमने खाया, बहुत मजा आया। अगले हफ्ते वो मेरे घर आए। तो मैंने कहा, चाय तो पीकर आए होंगे, 6 बज गए हैं। फिर तो खाने में कोई रुचि लेंगे ही नहीं। जब उन्होंने पांच चीज़ें बनाई थीं तो अपनी क्षमता से बनाई थीं, लेकिन अगर उन्होंने ये अपेक्षा रखी कि जब वो मेरे घर आएंगे तो मैं भी उतनी ही चीजें बनाऊंगी और नहीं बनाई, तो वो हर्ट हो जाएंगे। कहेंगे, इन्होंने मेरी बेइज्जती की, मेरे लिए कुछ बनाया ही नहीं।

सारा दिन हम जो कर्म करते हैं, अपने संस्कारों के द्वारा करते हैं। अपनी क्षमताओं के माध्यम से करते हैं। लेकिन हम ये अपेक्षा रखते हैं कि दूसरे के अंदर भी ऐसा ही संस्कार होगा, और अगर नहीं होता है तो हम हर्ट हो जाते हैं। और इससे भी जरूरी यह है कि इस फेर में हम अगली बार अपना संस्कार भी छोड़ देते हैं। ये कलियुग इसीलिए बना है ऐसा। किसी एक ने गुस्सा किया होगा पहली बार तब दूसरे ने कहा इसने मेरे साथ ऐसे बात की, मैं भी ऐसे ही बात करूंगा। तो दूसरे ने किया। उन दोनों ने किया तो उनको देखकर पांच ने किया। पांच ने किया फिर पांच सौ ने किया। आज यह स्थिति है कि गुस्सा करना नॉर्मल लगता है।

ये अपेक्षा न करें कि जो मेरी विशेषता है, वो दूसरे में भी हो। अपनी विशेषता नहीं छोड़नी है। लेकिन अगर हम दूसरों को देख-देखकर अपनी विशेषताएं छोड़ते जाएंगे तो क्या होगा? आजकल कौन टाइम पर आता है, मुझे भी टाइम पर नहीं जाना। आजकल कौन सच बोलता है, क्या जरूरत है सच बोलने की? नैतिक होने से क्या फायदा, आजकल तो बहुत कुछ चल रहा है? यहीं दूसरों को देख-देखकर अपनी विशेषताएं छोड़ते जाना है।

पुणे-महा.। माननीय उपमुख्यमंत्री,पूर्व मुख्यमंत्री तथा शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

अलीराजपुर-म.प्र.। महाशिवरात्रि महोत्सव पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् जोबट विधायक सेना पटेल, भाजपा जिला अध्यक्ष मक्कू परवाल, नगर सेठ पिंटू सेठ, ब्र.कु. माधुरी तथा अन्य सभी भाई-बहनों को प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु. माधुरी।

नवापारा राजिम-छ.ग.। महाशिवरात्रि मेले पर आयोजित संत सम्मेलन के अंतर्गत आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी विशोकानंद जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रुक्मणि दीदी,अकोला, ब्र.कु. पुष्पा दीदी एवं राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर। साथ हैं महामंडलेश्वर शैलेशानंद जी महाराज,सूरत।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर त्रिमूर्ति भवन में 'आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा' विषय पर आयोजित संत सम्मेलन में राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मिणि दीदी,महा., स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर, ब्र.कु. आशीष, विधायक रोहित साहू, गुरु सुमरिन जी,राजनांदगांव, महामंडलेश्वर अखिलेश्वरानंद जी महाराज, प्रेमानंद जी महाराज, स्वामी अखिलेश्वरानंद जी की उपस्थिति रही।

अमरावती-महा.। होटल महफिल इन में व्यवसायियों के लिए 'व्यवहार में सफलता के महामंत्र' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी, ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुंबई तथा अन्य अतिथिगण।

सिंगरौली-विंध्यनगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व तपोवन कॉम्प्लेक्स सेवाकेन्द्र द्वारा नार्दन कोलफिल्ड लिमिटेड निगाही क्षेत्र के ऑडिटोरियम में, अमलोरी एवं दुधीचुआ में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. हरीश,राष्ट्रीय संयोजक,प्रशासक प्रभाग,माउंट आबू। मौके पर ब्र.कु. मंजू बहन,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका, ब्र.कु. त्रिपाठी,अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक,प्रशासक प्रभाग, कोलफिल्ड लिमिटेड निगाही क्षेत्र के जनरल मैनेजर राजेंद्र वर्मा, अमलोरी के जीएम आलोक कुमार, दुधीचुआ के जीएम विनोद कुमार एवं वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति रही।

छोटा उदेपुर-गुज.। जयपुर में मानवता व परोपकार के लिए समर्पित समर्पण संस्था द्वारा राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान दुर्गापुरा स्थित सियाम ऑडिटोरियम में 10वें राष्ट्र स्तरीय समर्पण समाज गौरव - 2025 अवॉर्ड समारोह में डॉ. ब्र.कु. मोनिका को आदिवासी समाज की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 'रानी लक्ष्मीबाई समर्पण समाज गौरव - 2025' से सम्मानित करते हुए समर्पण समाज गौरव संस्था के अध्यक्ष डॉ. दौलत राम मालिया तथा अन्य।

बैतूल-म.प्र.। महाशिवरात्रि उपलक्ष्य पर भाग्य विधाता भवन में आयोजित प्राकृतिक चिकित्सा शिविर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष बाबा मानकोड़े, नेचुरोपैथी हॉस्पिटल भारत भारती के संचालक डॉ. अनिल मालवीय, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य नागेश पवार, वरिष्ठ नेचुरोपैथी डॉ. रमेश टवानी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. प्रताप तथा अन्य बहनें।

तुमसर-महा.। त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में नवनिर्वाचित नगराध्यक्ष एवं नगरसेवकों के स्वागत समारोह में सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ललिता बहन। साथ मंचासीन हैं ब्र.कु. सविता, नगराध्यक्ष खुशी पाण्डे एवं प्रतिष्ठित भाई।

शेगांव-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से माननीय ज्योति ताई खेडकर,जज,फलटन,जिला सतारा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरदा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. अनीता व वैभव खेडकर,इनकम टैक्स ऑफिसर।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिवध्वजा फहराने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. गीता, योग ट्रेनर डॉ. पवन मजावदिया, आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. दिलीप नलगे तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414172087
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹-720
Website: www.omshantimedia.org

लौकी और कद्दू...
गर्मियों की पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक सब्जियाँ

गर्मियों की पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक सब्जियाँ भारतीय रसोई में लौकी और कद्दू का विशेष स्थान है। ये दोनों ही सब्जियाँ स्वाद में हल्की, पचने में आसान और स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी मानी जाती हैं। विशेष रूप से गर्मियों के मौसम में इनका सेवन शरीर को ठंडक और पोषण प्रदान करता है। कम कैलोरी और अधिक पोषक तत्वों से भरपूर होने के कारण ये संतुलित आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

लौकी के स्वास्थ्य लाभ

लौकी, जिसे कई स्थानों पर घीया भी कहा जाता है, गर्मियों की प्रमुख सब्जी है। यह बेल पर उगती है और हरे रंग की होती है।

1. शरीर को ठंडक प्रदान करती है
लौकी में लगभग 90प्रतिशत पानी होता है। यह शरीर को हाइड्रेट रखने में मदद करती है और गर्मी के कारण होने वाली थकान को दूर करती है।

2. पाचन के लिए लाभकारी
लौकी में फाइबर की अच्छी मात्रा होती है जो कब्ज और गैस जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक है। इसका हल्का स्वभाव पेट को आराम देता है और पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है।

3. वजन घटाने में सहायक
कम कैलोरी और अधिक पानी की मात्रा होने के कारण लौकी वजन कम करने वालों के लिए अच्छा विकल्प है। इसे उबालकर या हल्के मसालों में पकाकर खाने से अतिरिक्त कैलोरी नहीं बढ़ती।

4. हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी
लौकी में पोटैशियम पाया जाता है, जो रक्तचाप को नियंत्रित रखने में मदद करता है। यह हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक है।

5. मधुमेह में उपयोगी
लौकी रक्त शर्करा को संतुलित रखने में मदद कर सकती है। इसका नियमित और संतुलित सेवन मधुमेह रोगियों के लिए लाभकारी माना जाता है।

कद्दू के स्वास्थ्य लाभ

कद्दू एक मीठा और पौष्टिक फल-सब्जी है, जो पीले या नारंगी रंग का होता है। यह भी भारत में व्यापक रूप से उगाया जाता है।

1. पोषक तत्वों से भरपूर
कद्दू में विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन ई और बीटा कैरोटीन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह आँखों की रोशनी के लिए विशेष रूप से लाभकारी है।

2. रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है
कद्दू में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाते हैं। यह शरीर को संक्रमण से बचाने में सहायक है।

3. त्वचा के लिए लाभकारी
बीटा कैरोटीन और विटामिन सी त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाए रखने में मदद करते हैं। कद्दू का नियमित सेवन त्वचा की प्राकृतिक चमक को बनाए रखता है।

4. पाचन सुधारता है
कद्दू में फाइबर की मात्रा अधिक होती है, जिससे पाचन सही रहता है और कब्ज की समस्या कम होती है।

5. हृदय के लिए अच्छा
कद्दू में मौजूद पोटैशियम और फाइबर हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। यह कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखने में मदद करता है।

लौकी और कद्दू का सेवन कैसे करें
लौकी की सब्जी, रायता या जूस बनाया जा सकता है।

कद्दू की सब्जी, सूप या हलवा बनाया जा सकता है।
दोनों को कम तेल और हल्के मसालों में पकाना अधिक लाभकारी होता है।

सावधानियाँ... हमेशा ताजी और हरी लौकी का ही सेवन करें। कड़वी लौकी का उपयोग नहीं करना चाहिए।
कद्दू को अधिक मीठा बनाकर खाने से अतिरिक्त शक्कर बढ़ सकती है। इसलिए संतुलन आवश्यक है।
किसी भी बीमारी की स्थिति में नियमित सेवन से पहले डॉक्टर की सलाह लेना उचित है।

नोट : लौकी और कद्दू दोनों ही सरल, सस्ती और पौष्टिक सब्जियां हैं। ये शरीर को ठंडक देने, पाचन सुधारने, हृदय को स्वस्थ रखने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक हैं। यदि इन्हें संतुलित मात्रा में और सही तरीके से पकाकर आहार में शामिल किया जाए, तो ये हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।
इस प्रकार, लौकी और कद्दू न केवल स्वादिष्ट हैं, बल्कि हमारे सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी हैं।

सातारा-महा.। गणतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सातारा शाहू स्टेडियम में ब्रह्माकुमारीज़ महिला प्रभाग द्वारा महिला सशक्तिकरण 'नारी भारत का गौरव' इस संकल्पना को लेकर चैतन्य झांकी के साथ समूह चित्र में पर्यटन मंत्री तथा सातारा के पालक मंत्री शंभूराजे देसाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुवर्णा तथा अन्य।

अंबिकापुर-चोपड़ा पारा(छ.ग.)। सरगंवा द पैलेस रिसॉर्ट में राज परिवार,त्रिदिवेश्वर शरण सिंह देव एवं परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत् महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ में कथा वाचक आचार्य अंकित त्रिपाठी जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन।

चीन-गुआंगझो। स्थानीय सेवाकेन्द्र पर ताओवादी गुरु आगमन पर उनसे ज्ञान चर्चा करने व राजयोग और ध्यान के अभ्यास पर अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के पश्चात् चित्र में साथ हैं ब्र.कु. सपना बहन तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

अमरावती-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ 'तपस्वधाम रिट्रीट सेंटर' के भूमि पूजन एवं उद्घाटन के दौरान उपस्थित रहे विधायक रविभाऊ राणा, विधायक राजेश वानखेडे, उनकी धर्मपत्नी आरतीताई वानखेडे, श्रद्धा दांडगे, अंतरराष्ट्रीय वक्ता एवं प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. ब्र.कु. सचिन परब, प्रसिद्ध संत सुधीर महाराज देशमुख, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता दीदी तथा अन्य।

केशोद-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के 42वें वार्षिकोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए नगरपालिका प्रमुख मेहुल गोंडलीया, नगरपालिका सभ्य मुकेश वाघेला, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. हिना तथा अन्य।

राजकोट-रवि रत्न पार्क(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से 'स्वास्थ्य, समृद्धि और सुख के रहस्य' विषय पर आयोजित त्रि-दिवसीय कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. अंजु, ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश, डॉ. भारती मैडम मेडिकल कॉलेज डीन, वार्ड नंबर 9 प्रमुख हिरेन जी, वार्ड नंबर 9 के नगर सेवक जीतू जी, विद्यानिकेतन स्कूल के प्रिंसिपल विमल जी, नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. मयूर जी, प्रमुख भाजपा नेता जयराज सिंह जाडेजा, पीजीवीसीएल गुजरात प्रमुख पी.जी. जाडेजा, डीवाईएसपी मरीन एटीएस करछ डी.के. झाला, गुरु अमरदास राज राजेश्वरी आश्रम नगदा के महंतश्री स्वामी अखंड ब्रह्मानंद जी तथा अन्य।

उमरेड-महा.। महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के दौरान उपस्थित रहे हरीश दुहन,अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,एसईसीएल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा, दीपक पाटिल,उपविभागीय अभियंता,कुमी, ब्र.कु. अशोक तथा अन्य भाई-बहनें।

फरांदे पार्क-नांदेड़(महा.)। महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम के पश्चात् हेल्थ चेक-अप कैंप के दौरान अष्टविनायक हॉस्पिटल के डॉ. साईनाथ अंकुशकर,एम. डी. मेडिसिन और उनकी टीम, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता तथा अन्य।

एडवर्स पार्टी की भूमिका और नई दुनिया की स्थापना में उसका महत्त्व

सृष्टि के परिवर्तन काल में, जब पुरानी दुनिया से नई दुनिया की ओर परिवर्तन होता है, तब केवल श्रेष्ठ शक्तियाँ ही नहीं, बल्कि विरोधी शक्तियाँ भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इन्हीं विरोधी शक्तियों को आध्यात्मिक भाषा में "एडवर्स पार्टी" कहा जाता है। एडवर्स पार्टी का अर्थ है- वह शक्ति, प्रवृत्ति या समूह जो सत्य, शान्ति, पवित्रता और एकता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है। देखने में यह नकारात्मक लग सकती है, परन्तु वास्तव में सृष्टि-नाटक में इसकी भी एक निश्चित और आवश्यक भूमिका है।

एडवर्स पार्टी का मुख्य कार्य आत्माओं को उनके वास्तविक स्वरूप से भटकाना है। यह माया, अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह और आसक्ति जैसे विकारों के माध्यम से मनुष्य को देह-अभिमान में ले आती है। इसके प्रभाव से मनुष्य स्वार्थी बनता है, संघर्ष बढ़ते हैं, हिंसा और अशान्ति का वातावरण बनता है। यही कारण है कि वर्तमान कलियुग में दुःख, अशान्ति और अव्यवस्था दिखाई देती है। एडवर्स पार्टी आत्माओं की परीक्षा लेती है- क्या वे परिस्थिति में फँसती है या साक्षी बनकर पार होती हैं।

आज के समय में एडवर्स पार्टी क्या कर रही है? वह अपने चरम पर है। विज्ञान की उन्नति के साथ-साथ विकारों की भी तीव्रता बढ़ी है। भोग-विलास, भौतिक सुख, सत्ता और संग्रह की होड़ ने मानव को आन्तरिक रूप से कमज़ोर बना दिया है। मीडिया, विचारधाराएँ और वातावरण भी कई बार मनुष्य को सत्य से दूर ले जाने का कार्य करते हैं। यह सब एडवर्स पार्टी की रणनीति है- आत्माओं को उनकी शक्ति भूलाकर निर्बल बनाना।

परन्तु सृष्टि के नियम अनुसार, जब अंधकार चरम पर पहुँचता है, तभी प्रकाश का प्राकट्य होता है। नई दुनिया अर्थात् सतयुग की स्थापना के लिए एडवर्स पार्टी का भी एक अप्रत्यक्ष रोल है। विरोध के बिना विजय का मूल्य समझ में नहीं आता। एडवर्स पार्टी आत्माओं को मजबूत बनने का अवसर देती है। जब आत्मा विकारों का सामना कर विजयी बनती है, तभी वह योग्य बनती है नई दुनिया की नागरिक बनने के लिए।

नई दुनिया की स्थापना कैसे होती है? वह तलवार या हिंसा से नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन से होती है। परमात्मा द्वारा दी गई ज्ञान-शक्ति से आत्माएँ अपनी पहचान- "मैं आत्मा हूँ"- में स्थित होती हैं। जैसे-जैसे आत्माएँ देह-अभिमान छोड़ आत्म-अभिमानी बनती हैं, वैसे-वैसे एडवर्स पार्टी स्वतः निष्क्रिय होती जाती है। योग, पवित्रता, सकारात्मक संकल्प और श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा आत्मा अपनी शक्ति बढ़ाती है और माया पर विजय प्राप्त करती है। इस प्रकार एडवर्स पार्टी न तो सदा के लिए शत्रु है और न ही स्वतंत्र सत्ता। वह सृष्टि-चक्र में एक अस्थायी भूमिका निभाती है। उसका उद्देश्य आत्माओं को गिराना नहीं, बल्कि उन्हें परखना है। जो आत्माएँ इस परीक्षा में सफल होती हैं, वही नई दुनिया की नींव बनती हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि एडवर्स पार्टी भी अप्रत्यक्ष रूप से नई दुनिया की स्थापना की प्रक्रिया का एक अंग है- क्योंकि बिना संघर्ष के श्रेष्ठता का उदय संभव नहीं।

अंततः एडवर्स पार्टी हमें यह सिखाती है कि बाहर की परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि हमारी आंतरिक स्थिति ही हमारे भविष्य का निर्माण करती है। जो आत्मा स्वयं पर विजय पाती है, वही विश्व-विजेता बनती है।

खरोरा-छ.ग.। ऑल इंडिया फुटबॉल मैच खरोरा में माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उमा व ब्र.कु. शालिनी। साथ हैं राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री टंकराम वर्मा, विधायक पद्मश्री अनुज शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष नवीन अग्रवाल, जनपद अध्यक्ष टिकेश्वर मनहरे तथा अन्य।

पणजी-गोवा। 90वीं महाशिवरात्रि पर आयोजित सात दिवसीय कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए प्रख्यात वक्ता डॉ. सचिन परब। मौके पर उपस्थित रहे गोवा के राज्यपाल पुसापति अशोक गजपति राजू, केंद्रीय मंत्री श्रीपाद नाईक, विधायक डॉ. चंद्रकांत शेट्टी, विधायक प्रेमेंद्र शेट, स्थानीय नगरपालिका अध्यक्षा सिद्धी प्रभु, पद्मश्री ब्रह्मानंद शंखवालकर, डॉ. ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन, गोवा-सिंधुदुर्ग सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शोभा दीदी तथा अन्य।

पन्ना-म.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् चित्र में पूर्व कैबिनेट मंत्री बृजेंद्र प्रताप सिंह,पन्ना विधायक, डॉ. पीयूष, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'दादी माँ स्नेह मिलन समारोह' में उपस्थित रहे भोपाल ज़ोन डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। मौके पर रीवा संचालिका ब्र.कु. लता, ब्र.कु. अर्चना,चाकघाट, ब्र.कु. ममता,डभौरा, ब्र.कु. पूर्णिमा,मऊगंज, ब्र.कु. खुशबू,हनुमना, ब्र.कु. अन्नपूर्णा,गोविन्दगढ़, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. मीनाक्षी, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. कृतिका-रितिका आईटीआई ट्रेनर, प्राचार्य ब्र.कु. दीपक तिवारी, सैनिक स्कूल के प्राचार्य कर्नल अविनाश रावल, पूर्व पार्षद शांति सुंदरानी, डॉ. ज्योति सिंह, एडवोकेट सूर्य प्रकाश मिश्रा, ब्रिगेडियर अभिषेक यादव तथा अन्य गणमान्य व्यक्तिगण।

नरसिंहपुर-म.प्र.। 'संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था जीवन एवं सम्मानित जीवन' अभियान के अंतर्गत स्थानीय हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित 'दिव्य संस्कार भवन' में वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोजित स्नेह मिलन के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में पूर्व राज्यमंत्री जालम सिंह पटेल, वरिष्ठ समाजसेवी सुनील कोठारी, वरिष्ठ जन परिषद अध्यक्ष गणेश चतुर्वेदी, संस्कृत प्रभारी मदन गोपाल शर्मा, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती सुशीला कोठारी, फिजियोथैरेपिस्ट मोनल शर्मा, जिला सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

नांदेड़-महा.। क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर 'जीवन साधना फाउंडेशन और बीड़ंग हनुमन केशव फाउंडेशन परभणी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता को समाज में की गई उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 'क्रांतिज्योति प्रेरणा राज्यस्तरीय पुरस्कार - 2026' से सम्मानित किया गया।

भोपाल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के ब्लेसिंग हाउस सेवाकेन्द्र के द्वारा आध्यात्मिक संग्रहालय एवं डिवाइन विज़डम पार्क के भूमि पूजन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, भोपाल ज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना, मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष अवधेश प्रताप सिंह, भोजपुर शिव मंदिर महंत शैलेन्द्र गिरि, ब्र.कु. डॉ. रावेन्द्र एवं अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

नवसारी-ब्र.कु. मार्ग(गुज.)। 90वीं महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए म्युनिसिपल कमिश्नर देव चौधरी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. भानु दीदी तथा अन्य।

केशोद-गुज.। महाशिवरात्रि पर आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंगम के अवलोकन एवं शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम के पश्चात् डॉ. स्नेहल तन्ना, प्रो. डॉ. जोशी, डॉ. घेनेश, ब्र.कु. जीतु, ब्र.कु. शशिकांत, ब्र.कु. मीता, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. दक्षा तथा अन्य सभी को प्रतिज्ञा कराते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रूपा दीदी।

रतलाम-नामली(म.प्र.)। 90वें शिव जयंती महोत्सव में शिव परमात्मा का झंडा फहराने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए ग्राम घटवास के गुरु दिनेश व्यास, जिला पंचायत सदस्य राजेश भरवा, जिला कांग्रेस अध्यक्षा वंदना राज पुरोहित, रतलाम सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पार्वती, बड़नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलम तथा अन्य भाई-बहनें।

मुंबई-धारावी(महा.)। 90वीं महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करने के पश्चात् उपस्थित रहे प्रीति चैतन्य ताठे,बृहन्मुंबई महानगरपालिका ऑडिटर, राजू बीडकर,वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक,धारावी पुलिस ठाणे, आनंद भोसले,शिवसेना शाखा प्रमुख, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता बहन तथा अन्य।

बैतूल-चोपना(म.प्र.)। स्टेट एक्शन प्लान फॉर सीनियर सिटीजन के अंतर्गत भारत सरकार एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त पहल संगम प्रोजेक्ट के तहत वरिष्ठ नागरिकों हेतु राजयोग ध्यान एवं जागरूकता कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में सामाजिक सुरक्षा अधिकारी नीतू सिंह नरे, अपना घर आश्रम अधीक्षक नारायण चंद, जनपद सदस्य दिलीप कुमार,पोखड़ोंगरी, ब्र.कु. पूर्णिमा, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. नंदकिशोर एवं वरिष्ठ नागरिक।

परमात्म ऊर्जा

कूड़े कचरे का डिब्बा

मैजॉरिटी का पुरुषार्थ क्यों कम या ढीला होता है, उसके तीन मुख्य कारण बापदादा ने देखे हैं। पहला कारण मनमत- अगर एक बारी भी आपने किसी को कूड़े कचरे की बात सुन ली तो दूसरी बार वह कहाँ जायेगा? आप उसके लिए कूड़े-कचरे का डिब्बा बन गए हैं ना। जब कभी ऐसा-वैसा समाचार होगा तब वह आपके पास ही आयेगा, अपना सारा कूड़ा-कचरा सुनाने के लिए क्योंकि आपने एक बार सुना है ना। अब उसे समझाओ कि, ऐसी-वैसी बातें हमें न सुनाए या उसको ऐसी बातों से मुक्त करो। सुन करके इंटरेस्ट नहीं बढ़ाओ। अगर आप में इतनी ताकत हो जो सेकण्ड में बातों पर फुलस्टॉप लगा सको, उसके प्रति दृष्टि में व संकल्प में भी घृणा भाव बिल्कुल नहीं आए, इतनी पॉवर आप में है तब ही सुनना। दूसरा कारण, श्रीमत में परचिंतन- परचिंतन वालों का स्वचिंतन कभी नहीं चलेगा। कोई भी बात होगी परचिंतन वाला अपनी गलती दूसरों पर लगाएगा। बात बनाने में नम्बर वन होते हैं। स्वचिंतन इसको नहीं कहा जाता है कि सिर्फ ज्ञान की पॉइंट्स सुन ली, सुना ली, रिपीट कर दी। स्वचिंतन अर्थात् अपनी सूक्ष्म कमज़ोरियों को, छोटी-छोटी गलतियों को चिन्तन करके मिटाना, परिवर्तन करना, यह है स्वचिंतन। तीसरा कारण परदर्शन- दूसरे को देखने में मैजॉरिटी होशियार हैं। जो दूसरे को देखने में समय लगाएगा उसको खुद को देखने का समय कहाँ से मिलेगा! वह बात अलग है कि ज़िम्मेवारी के कारण सुनना-देखना भी पड़ता है, उसमें भी कल्याण की भावना से सुनना और देखना लेकिन अपनी अवस्था को हलचल में लाकर देखना, सुनना या सोचना यह बिल्कुल रॉन्ग है। अगर आप अपने को ज़िम्मेवार समझते हो तो ज़िम्मेवारी के पहले अपनी स्थिति रूपी ब्रेक पॉवरफुल बनाओ। ज़िम्मेवारी भी एक ऊंची स्थिति है। ज़िम्मेवारी भल उठाओ लेकिन पहले यह चेक करो कि सेकण्ड में बिंदी लगती है? तीन 'प' की बातों से मुक्त बनो और एक 'प' की बात धारण कर लो। तीनों प्रकार के 'प' परमत, परचिंतन, परदर्शन को खत्म करो और एक 'प' पर उपकारी बनो, सर्व उपकारी बनो।

अधूरी सीढ़ी भी काफी है

एक युवक पहाड़ की चोटी पर पहुँचने का सपना देखता था। जब भी चढ़ाई शुरू करता, थोड़ी दूरी तय करके ही वापस लौट आता। उसे लगता था कि रास्ता बहुत लंबा है और वह इसे पूरा नहीं कर पाएगा।

एक दिन उसे एक बुजुर्ग संत मिले। युवक ने अपनी समस्या बताई। संत उसे पास की एक पुरानी सीढ़ी के पास ले गए। सीढ़ी टूटी हुई थी और केवल पाँच पायदान ही बचे थे। संत बोले - "इस सीढ़ी पर चढ़कर दिखाओ।"

युवक ने कहा - "संतजी, यह सीढ़ी अधूरी है, इससे मैं ऊपर कैसे पहुंचूंगा?"

संत मुस्कुरा कर बोले - "बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम अपने सपने तक पहुँचोगे - एक-एक कदम बढ़ाते हुए। पूरा रास्ता दिखना ज़रूरी नहीं, पहला कदम उठाना ज़रूरी है।"

युवक को बात समझ आ गई। उसने पहाड़ चढ़ना शुरू किया, इस बार बिना सोचे कि रास्ता कितना बाकी है। वह केवल अगले कदम पर ध्यान देता रहा। कई घंटों की मेहनत के बाद वह आखिरकार चोटी तक पहुँच गया।

शिक्षा : ज़िंदगी में पूरा रास्ता एक साथ दिखना ज़रूरी नहीं। पहला कदम हिम्मत से उठाओ, रास्ता खुद ब खुद बनता जाता है।

मूर्तिकार और पत्थर

एक मूर्तिकार था जो पत्थरों से सुंदर मूर्तियां बनाता था। उसका शिष्य हमेशा पूछता - "गुरु जी, आप कैसे जानते हैं कि इस पत्थर के अंदर कौन सी मूर्ति छिपी है?"

मूर्तिकार हँसकर कहता - "मैं मूर्ति नहीं बनाता, मैं सिर्फ अनावश्यक हिस्से हटाता हूँ, पहली से ही मूर्ति पत्थर में मौजूद होती है।"

एक दिन शिष्य ने अपनी पहली मूर्ति बनानी शुरू की। उसने कई बार गलतियां की, मूर्ति टूट गई, आकार बिगड़ गया। वह निराश होकर बोला - "मुझसे नहीं होगा।"

गुरु जी ने उसे शांत होकर कहा - "जिस तरह मैं पत्थर में छिपी मूर्ति को बाहर लाता हूँ, उसी तरह मेहनत तुम्हारे भीतर छिपी क्षमता को बाहर लाएगी। लेकिन उसके लिए तुम्हें अपने डर, आलस और शंकाओं को हटाना होगा।"

शिष्य ने हिम्मत नहीं छोड़ी और काम जारी रखा। कुछ समय बाद उसने अपनी पहली सुंदर मूर्ति बना ली।

गुरु जी बोले - "हम सबके भीतर प्रतिभा छिपी होती है, बस उसे बाहर आने का साहस चाहिए।"

शिक्षा : विकास बाहर से नहीं, अंदर से शुरू होता है।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। विश्व कैंसर दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कैंसर सर्जन डॉ. संजय देसाई, क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, कोकिला देवी हॉस्पिटल के कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. एस.पी. श्रीवास्तव, वरिष्ठ सलाहकार मेडिकल ऑन्कोलॉजी डॉ. राकेश तारण, पुष्प श्री हॉस्पिटल के संचालक डॉ. गिरीश टीवरी, डॉ. शिल्पा देसाई, दिनेश बिसेन, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. उषा तथा अन्य।

रतलाम-म.प्र.। राजीव गांधी सिविक सेंटर सेवाकेन्द्र विशनीत योग संगीत संस्थान के जिला प्रभारी विशाल वर्मा एवं मिलिंद आचार्य द्वारा आयोजित जिला पुरातत्व पर्यटन एवं सांस्कृतिक परिषद गुलाब चक्कर पर डॉ. दिव्या पाटीदार डायरेक्टर दी ब्रेइंग इंडिया फाउंडेशन,मिस इंडिया 2018,मिस यूनिवर्स सेंट्रल एशिया 2021,क्वीन ऑफ गैलेक्सी 2022 को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं वरिष्ठ समाजसेवी प्रकाश व्यास, पतंजलि युवा भारत राज्य प्रभारी प्रेम पुनिया, ब्र.कु. मनोरमा, महावीर इंटरकॉन्टिनेंटल अध्यक्ष डॉ. प्रदीप जैन, विनोद सिसोदिया तथा अन्य।

ग्वालियर-इन्द्रगंज(म.प्र.)। संस्था के 90वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में मोहित गार्डन,जैन छात्रावास में आयोजित महाशिवरात्रि के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में पूर्व क्षेत्र विधायक डॉ. सतीश सिंह सिकरवार, भाजपा प्रदेश कार्य समिति आशीष प्रताप सिंह राठौड़, कांग्रेस मुरार ब्लॉक अध्यक्ष विनोद जैन, आरोग्य भारती के डॉ. एसपी बत्रा, डॉ. आनंद गुप्ता, श्री राम सविता, व्यवसायी गोविंद सिंह, पार्षद अनिल सांखला, स्वदेश के समूह संपादक अतुल तारे, समाजसेवी महिमा तारे, भारतीय योग संस्थान से महेश अग्रवाल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. प्रहलाद तथा अन्य की उपस्थिति रही।

लखनादौन-सिवनी(म.प्र.)। राष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलक्ष्य में कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में अधीक्षिका हेमलता साहू जी, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. पूजा एवं बालिकाएं।

पुणे-ससाणे नगर(महा.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिवरात्रि पर आयोजित मेले का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए नगरसेवक मारुती आबा तुपे। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्मिता तथा अन्य।

पिंपले निलख-पुणे(महा.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती महोत्सव के पर लगाई प्रदर्शनी के दौरान समूह चित्र में नगरसेविका आरतीताई चोंधे, नगरसेविका स्नेहलताई कामठे, समाजसेवक शितोष आप्पा साठे,सचिन साठे,फवन कामठे, राहुल पठारे व संकेत चोंधे, ब्र.कु. सुरेखा बहन, ब्र.कु. सुनीता, सुनील भाऊ एवं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल प्रभाग तथा भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत एमके हायर सेकेंडरी स्कूल परिसर में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. नमता, गिरवर गोपाल जिला नशा मुक्ति केन्द्र के कृष्ण कुमार खरे, स्कूल डायरेक्टर दिनेश रावत, उपनिदेशक विनीता पटेरिया एवं समस्त स्टाफ।

भरूच-गुज.। 90वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए उद्योगपति भरत गोधानिया, ब्र.कु. मीता, ब्र.कु. दक्षा तथा अन्य।

समय की महसूसता से सम्पूर्णता की ओर

1. महसूसता की शक्तिः आत्मा का जागृत स्वरूप

अक्सर हम बड़ी गलतियों(जैसे क्रोध या लोभ) पर तो ध्यान देते हैं, लेकिन सूक्ष्म कमियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। संगमयुग के इस अंतिम समय में, हमारी स्थिति एक साफ दर्पण की तरह होनी चाहिए। जैसे एक दूध से भरे बर्तन में नींबू की एक छोटी-सी बूंद पूरे दूध को फाड़ देती है, वैसे ही सम्पूर्णता की ओर बढ़ती आत्मा के पुरुषार्थ में एक छोटा-सा 'व्यर्थ संकल्प' या 'अभिमान का अंश' भी बहुत बड़ा विघ्न पैदा कर सकता है। जैसे एक कुशल घड़ीसाज़ घड़ी के सबसे छोटे पुर्जे की धूल को भी पहचान लेता है क्योंकि वह जानता है कि एक छोटा-सा कण भी समय को धीमा कर सकता है। इसी प्रकार, हमें अपने स्वभाव और संस्कारों की सूक्ष्म बारीकियों को महसूस करना होगा। जब तक गलती महसूस नहीं होगी, उसके सुधार का द्वार नहीं खुलेगा।

संगमयुग, जिसे स्वयं भगवान ने 'कल्याणकारी युग' की संज्ञा दी है, अब अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुका है। बाबा मुरली में बार-बार संकेत दे रहे हैं कि समय बहुत थोड़ा है। इस नाजुक घड़ी में एक तीव्र पुरुषार्थी आत्मा के लिए तीन बातें सबसे अनिवार्य हैं: छोटी से छोटी गलती की महसूसता, उसे बदलने का संकल्प और बाबा की स्मृति द्वारा तुरंत 'फुल स्टॉप' लगाना।

2. परिवर्तन की शक्ति : महसूसता से कर्म तक का सफर

महसूसता केवल पहला कदम है। यदि हमें पता चल जाए कि घर में आग लगी है(गलती महसूस हो जाए), लेकिन हम उसे बुझाने का प्रयास(परिवर्तन) न करें, तो नुकसान निश्चित है। बाबा कहते हैं कि महसूसता के साथ 'शक्ति' जोड़ना ही असली पुरुषार्थ है। परिवर्तन का अर्थ है- अपने पुराने संस्कारों को नए दैवीय संस्कारों में तब्दील करना। जैसे एक किसान जब यह देखता है कि खेत में खरपतवार उग आई है, तो वह केवल उसे देखता नहीं रहता, बल्कि उसे जड़ से उखाड़कर वहाँ नए बीज बोता है। इसी तरह, जैसे ही हमें अपनी किसी कमज़ोरी का पता चले, उसे तुरंत शुभ गुणों और शक्तियों से बदल लेना चाहिए।

3. फुल स्टॉप और बाबा के महावाक्यों की स्मृति

यह सबसे महत्त्वपूर्ण चरण है जिसे आपने स्पष्ट किया। अक्सर आत्माएँ गलती महसूस करती हैं और उसे बदलना भी चाहती हैं, लेकिन उस गलती के बारे में "क्यों, क्या, कैसे" सोचकर बहुत सारा समय व्यर्थ कर देती हैं। बाबा कहते हैं-"बीती सो बीती।" जो हुआ उसे एक सेकंड में 'फुल स्टॉप' लगाकर खत्म करना ही बुद्धिमानी है।

व्यर्थ को समाप्त करने का सबसे सरल तरीका है- बाबा के महावाक्यों की स्मृति को सामने लाना। जब मन में अंधकार या भ्रम हो, तो ज्ञान का एक महावाक्य 'लाइट' की तरह काम करता है। जैसे कल्पना कीजिए कि आप गाड़ी चला रहे हैं और रास्ता भटक गए। अब समझदारी इसमें नहीं है कि आप वहीं रुककर रोएं या यह सोचें कि गलती कैसे हुई। समझदारी इसमें है कि जैसे ही गलती महसूस हो, तुरंत 'ब्रेक' (फुल स्टॉप) लगाएं, 'जीपीएस'(बाबा के महावाक्य) की मदद लें और सही दिशा में आगे बढ़ जाएं। जैसे ही आप स्मृति स्वरूप बनते हैं कि "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ", पुरानी गलती का बोझ स्वतः ही खत्म हो जाता है।

संगम युग का एक-एक सेकंड करोड़ों के समान है। अब हमारे पास विस्तार में जाने का समय नहीं है। हमें 'बिन्दु' बनकर 'बिन्दु'(शिव बाबा) को याद करना है। यदि हम अपनी छोटी-छोटी गलतियों को तुरंत महसूस कर, उन्हें बाबा की याद के जादुई मंत्र से बदल लें और 'फुल स्टॉप' लगाकर आगे बढ़े, तो हम बहुत जल्द 'सफलता मूरत' बन जाएंगे। यही वह समय है जब हमें अपने समय, संकल्प और शक्तियों की बचत कर 'डबल लाइट' फरिश्ता बनना है।

बिलासपुर-छ.ग.। व्यापार एवं उद्योग मेला आयोजन समिति के तत्वावधान में आयोजित समारोह में समाजसेवा एवं नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्र.कु. मंजू को 'सावित्रीबाई फुले नारी शक्ति सेवा सम्मान' से सम्मानित करते हुए उपमुख्यमंत्री अरुण साव। साथ हैं बेलतरा विधायक सुशांत शुक्ला, महापौर पूजा विधानी, सीएआईटी व्यापार एवं उद्योग संघ के अध्यक्ष किरण पाल चावला, ब्र.कु. गायत्री, ब्र.कु. पूर्णिमा तथा अन्य।

दुर्ग-केलाबाड़ी(छ.ग.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित आनंद सरोवर,बघेरा में द्वादश ज्योतिर्लिंगम एवं चैतन्य झाँकी का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करने के पश्चात् गजेंद्र यादव,कैबिनेट मंत्री स्कूल शिक्षा,ग्रामोद्योग,विधि एवं विधायी कार्य, विवेक अग्रवाल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा तथा अन्य।

शेगांव-महा.। राष्ट्रीय आरोग्य मेला-2026 नियोजन बैठक में दिल्ली आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव का स्वागत करते हुए ब्र.कु. शारदा दीदी व ब्र.कु. विजय। साथ हैं ब्र.कु. अनीता।

जलालवाड़ी-सतारा(महा.)। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र पर कार्यक्रम के दौरान नवनिर्वाचित पंचायत समिति सदस्य कोमल दलवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा। साथ हैं सेवानिवृत्त सहायक अधीक्षक अभियंता बालासाहेब पाटिल, सहायक अधीक्षक अभियंता धनाजी माने, प्राचार्य श्रीमती शारदा भिलवे।

उदवाड़ा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़, लायंस क्लब और सीनियर सिटीजन एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'शिवपुराण कथा' में पद्मश्री उद्योगपति गफूर बिलखिया को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. पारुल व ब्र.कु. मीनल।

राजकोट-रवि रत्न पार्क(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ स्थापना के 90 वर्ष पूर्ण होने पर महाशिवरात्रि मेले के भव्य उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नलिनी, विधायक डॉ. दर्शिता शाह, मेयर नयना पेढड़िया, सरगम क्लब के गुणवंत देलावाला, पूर्व शहर भाजपा के कमलेश मिरानी, वार्ड कॉर्पोरेटर आशा जी, पंचशील स्कूल के डॉ. डी.के. वाडोदरिया, ठेकोरा ग्रुप के जमन जी तथा अन्य।

व्यारा-गुज.। प्रिंसिपल डिस्ट्रिक्ट जज तेजस देसाई को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दीपा।

छतरपुर-म.प्र.। राष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलक्ष्य में शासकीय उत्कृष्ट बालिका छात्रावास अनुसूचित जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावास की बालिकाओं के लिए विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कल्पना, छात्रावास अधीक्षक माया जी, शिक्षिका नेहा जी, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. नमता तथा अन्य।

जूनागढ़-केशोद(गुज.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर शोभायात्रा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मणि,लंदन, ब्र.कु. जया, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. किना, ब्र.कु. दया एवं अन्य भाई-बहनें।

इंदौर-सुदामा नगर(म.प्र.)। प्रभु उपहार भवन में 77वें गणतंत्र दिवस पर तिरंगा फहराते हुए डॉ. सचिन नरहानपुरकर, हाई स्कूल हेडमास्टर एआर साहू, गीतकार सुनील, ब्र.कु. दामिनी, ब्र.कु. शैल, ब्र.कु. प्रकाश तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

तकदीर की तस्वीर

- राजयोगी ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

कहावत है कि सभी इस दुनिया में अपना भाग्य लेकर ही आये हैं। लेकिन उस भाग्य को हमें अपने हिसाब से, अपने दायरे से, अपनी मर्यादाओं से, अपनी धारणाओं से चमकाना है। लेकिन कहा जाता है तकदीर को जगाने के लिए या तकदीर को और अच्छा बनाने के लिए हमको कुछ तदबीर करनी पड़ती है। तदबीर का अर्थ है- पुरुषार्थ करना पड़ता है, कर्म करना पड़ता है और उस कर्म को करने से हमारी तकदीर चमकती है, या आगे जगती है। लेकिन इसमें एक बहुत बड़ा द्वंद है कि बहुतों की तकदीर बहुत अच्छी है, कर्म भी बहुत अच्छा है लेकिन तकदीर फिर भी आगे नहीं जगती, कारण क्या है? तो इस कारण को समझते हैं और उसके निवारण को भी समझते हैं।

कहा जाता है कि इस दुनिया में पुरुषार्थ, भाग्य और कर्म इन तीनों को समझने के लिए ऐसे इसको समझा जा सकता है कि कर्म या पुरुषार्थ, भाग्य या प्रालब्ध, ये दोनों चीजें एक के ऊपर निर्भर करती हैं। और वो एक है हम सबकी चेतना, हम सबकी जागृति, हम सबका जगना। जब किसी से एक बार प्रश्न पूछा गया कि भाग्य बड़ा है इस दुनिया में या कर्म बड़ा है, या कोई और एक चीज़ है जो हम सबसे बड़ी है। तो कहते हैं- ना भाग्य बड़ा है, ना कर्म बड़ा है। हमारे पास एक चेतना है वो सबसे बड़ी है। उसी चेतना को हम बुद्धि कहते हैं, समझ कहते हैं, अंडरस्टैंडिंग कहते हैं। वो अगर हमारे अंदर है तो हमारा कर्म भी अच्छा होगा और जो भाग्य हमको मिला है माता-पिता से या हमारे कर्मों से, उसको हम बहुत श्रेष्ठ तरीके से निभा भी पाएंगे।

तो प्रश्न ये है कि हम सबका भाग्य तो अच्छा ही था, शुरू से मिला ही अच्छा है, और जिसको नहीं मिला है उसने अपनी बुद्धि से, अपनी समझ से उसको बनाने की कोशिश की। लेकिन समझ वो नहीं जो बाहर की दुनिया के ईसान हमको सिखाते हैं, समझ वो जिसमें कल्याण है, जिसमें केवल कल्याण है, तो हमारे कर्म के अन्दर बरकत होती है। कर्म हमसे कभी खराब हो ही नहीं सकते। लेकिन बाहर की जो बुद्धि हमको मिली है उसमें मिक्शयरिटी है, उसमें सबकुछ मिक्स करके बताया जाता है।

तो अगर हमारी बुद्धि, हमारी चेतना या हमारा आत्मिक भाव या हमारा तीसरा नेत्र अगर खुल जाता है तो हमारा भाग्य बदल जाएगा और अगर भाग्य नहीं भी बदला है, तो हमारे कर्म अच्छे होने लग जायेंगे, तो भी भाग्य बदल जाएगा। इसलिए तराजू को अगर तीनों बातों के लिए एक साथ रखा जाए, तराजू का उदाहरण दिया जाए तो एक तरफ भाग्य को रख दीजिए, प्रालब्ध को रख दीजिए एक तरफ कर्म को रख लीजिए और बीच में जो बैलेंस बनाने का काम है वो बुद्धि का काम है। इसलिए परमात्मा ने आकर हमको बुद्धि दी, समझ दी, समझाया कि अगर अपनी तकदीर को जगाना है और जो तस्वीर हमको दिखाई कल्याणकारी वाली, एक दिव्यगुणों वाली, दिव्यता वाली, उस तस्वीर को प्राप्त करने के लिए हमें सबसे पहले अपनी बुद्धि को पॉवरफुल बनाना पड़ेगा, शक्तिशाली बनाना पड़ेगा। अब हमारी बुद्धि काम क्यों नहीं करती है, आज इसको समझ लेना है।

परमात्मा कहते हैं कि इस दुनिया में तीन चीज़ों से हमको बचना है - एक आलस्य से, एक अलबेलेपन से, तीसरी बहाने बाजी से। अब तीनों का रिज़न समझ लेते हैं। आलस्य अब हमारे अन्दर तब घर कर जाता है, बैठ जाता है जब हमारे अन्दर रचनात्मकता खत्म हो जाती है।

जब हम कुछ क्रिएटिव नहीं करते हैं तो हम धीरे-धीरे आलसी हो जाते हैं। तो हमारे आलस्य को भगाने के लिए क्रिएटिविटी चाहिए, या रचनात्मकता चाहिए, कुछ नयापन चाहिए, और बहाने बाजी जो हम बहुत ज़्यादा करते हैं, किसी के लिए बार-बार बहाना बनाते हैं तो उसका एक मात्र कारण है कि हमारा बाहरी दुनिया से आकर्षण है। चाहे वो किसी का भी हो सकता है, मेल का हो सकता है, फिमेल का हो सकता है या फिर वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ कुछ भी हो सकता है, लेकिन बाहरी दुनिया का आकर्षण हमारे को बहाना बनाने के लिए विवश करता है।

हम बार-बार बहाना बनाएंगे कि नहीं आज ये काम है, आज वो काम है, वो हमारे अन्दर का अट्रैक्शन है, आकर्षण है जो बाहरी दुनिया से हमको जोड़ता है और जो बीच वाला है जिसको हम अलबेलापन या केयरलेसनेस कहते हैं इन दोनों के द्वारा अपने आप हमारे अन्दर आ जाता है। और जब ये आता है तो हमारी बुद्धि नष्ट हो जाती है। इसीलिए परमात्मा ने कहा कि चेतना की जागृति के लिए हमको सबसे पहले इन तीनों को जीतना ज़रूरी है और जब हम इन तीनों को जीत जाते हैं तो क्या जबरदस्त हमारा भाग्य बनता है और उस तकदीर की जो तस्वीर बनती है उसको देखने के लिए पूरी दुनिया आपके सामने नतमस्तक होती है। लेकिन वो तकदीर, वो तस्वीर केवल कल्याणकारी विचारों वाली है। जब हमारे मकसद में कल्याण होता है ना तो हमसे गलती नहीं होती, इसीलिए कल्याणकारी भाव से जो कर्म हुआ वो कर्म सबसे सही है। बाकी सारे कर्म में कुछ न कुछ खोट है। इसी बात को लेकर आप आगे बढ़ेंगे तो निश्चित रूप से सफलता भी मिलेगी और लोग सराहेंगे भी और उसका असर भी आपको नहीं होगा।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं खुर्जा,उत्तर प्रदेश से हिमांशु गौतम हूं। मेरा छोटा भाई ड्रिंक करता है और हर किसी से हार्ड बिहेव करता है, जिसके कारण घर का माहौल खराब रहता है। हम उसके लिए विशेष क्या अभ्यास कर सकते हैं?

उत्तर : ये घर-घर में जो आजकल ड्रिंकिंग की प्रथा चल गई है, कोई न कोई ऐसा निकल ही जाता है जो शराब का, व्यसन का शिकार हो जाता है। इससे सबकुछ बिगड़ जाता है। उसका व्यवहार बिगड़ जाता है। दूसरे लोग भी उससे कटे-कटे से रहने लगते हैं। कई अच्छे परिवार होते हैं तो उन्हें अपने सम्मान की भी चिंता रहती है। लेकिन लोगों को ये भूल गया है कि समय अब विकराल काल की ओर बढ़ रहा है। घोर अंधकार संसार में छाता जा रहा है और ये जो आधुनिक परंपराएं बन गई हैं ये मनुष्य का सर्वनाश करती जा रही हैं। हमको रोज़ ऐसे समाचार सुनने को मिलते हैं कि वहाँ ये हो गया, वहाँ ये हो गया शराब पीता था किडनी फेल हो गई, लिवर ने काम करना बंद कर दिया। अब बच्चे थे दो अभी छोटी आयु थी, अभी चालीस साल भी नहीं हुए थे। अब उसकी पत्नी रो रही है क्या करें? तो ये सब जो दुर्गति है वो बाद में मनुष्य को समझ आती है। तो इससे बचने के लिए उन्हें अब राजयोग के पथ पर कदम रखने चाहिए। अगर वो नहीं रखते जैसा इन्होंने प्रश्न किया है इनकी माँ को या इनकी पत्नी को पवित्र भोजन उन्हें खिलाना चाहिए। पानी चार्ज करके भी उन्हें पिलाना चाहिए। और खास उनके लिए एक घंटा मेडिटेशन अवश्य करना चाहिए। हमारे यहाँ माउंट आबू में हमारा हॉस्पिटल भी है, हमारे यहाँ हॉम्योपैथी डॉक्टर्स ने बहुत अच्छे कॉम्बिनेशन तैयार किए हैं, फ्री में ही दिए जाते हैं। तो उसका भी फायदा लिया जा सकता है। कोई भी आये-जाये उससे मंगा लें और उसे खिलाएं। क्योंकि इच्छा भी होती है मैं इससे मुक्त हो जाऊं अगर ज़रा भी उस व्यक्ति की इच्छा है कि मैं उससे मुक्त हो जाऊं तो वो जल्दी ही इस व्यसन से मुक्त हो जायेगा। और नहीं इच्छा है तो उसे भिन्न भिन्न तरीकों से दिया जा सकता है ताकि उस व्यसन के प्रति उसे अरुचि का भाव पैदा हो जाये और ये समस्या ठीक हो जाये। लेकिन एक घंटा योगदान, पवित्र भोजन, चार्ज किया हुआ पानी रोज़ उसको देंगे तो ज़रूर कुछ न कुछ परिवर्तन होगा।

प्रश्न : मैं ममता हूं मुम्बई से। 2012 से ही मुझे एक प्रॉब्लम शुरू हो गई है और अनायास ही मुझे डर लगता है, नर्वसनेस रहती है और निगेटिव थिंकिंग बहुत चलती है। क्या कारण है इसका और अब मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : ये समस्या अब संसार में बहुत बढ़ती जा रही है। पहले बुजुर्ग होने पर मनुष्य की ये स्थिति हो जाती थी कभी-कभी। तो लोग ख्याल नहीं करते थे कि बहुत साल ब्रेन को बहुत यूज़ कर लिया है, अब ये हो रहा है। तो कोई बात नहीं ठीक हो जायेगा, अंतिम स्थिति है। लेकिन आजकल ये स्थिति युवकों में भी बहुत होने लगी है। इसके कारण हैं कि ब्रेन बहुत वीक हो चुका है। चारों ओर से निगेटिव एनर्जी ज़्यादा प्रवेश कर रही है मनुष्य के मन में। चारों ओर गंदगी के अलावा और कुछ भी नहीं है। और फिर मनुष्य के अन्दर भी निगेटिव फीलिंग बहुत है। उसके निगेटिव विचार बहुत चलते हैं। तो टोटली ब्रेन और मन पॉल्यूटेड होता जा रहा है, यही कारण है इनको ये स्थिति प्राप्त हुई है। लेकिन कर्मों की गुह्य गति को जानते हैं, उनको मैं कहना चाहूँगा कि इसमें पूर्व जन्मों के कार्मिक अकाउंट का भी बहुत बड़ा रोल होता है। पूर्व में किसी ने किसी को बहुत सताया है। बहुत मानसिक पीड़ाएं दी हैं, बहुत हर्ट किया है किसी को। सोने नहीं दिया किसी को। नींद फिटा दी है। तो रिटर्न वैसा ही मिलता है ना। क्योंकि कर्म सिद्धान्त यही है कि जो मनुष्य जिसके साथ जैसा व्यवहार करेगा उसको वैसा ही व्यवहार प्राप्त होगा। उसको वही चीज़ें आ जाती हैं। तो इनकी जो मानसिक स्थिति इस तरह की हो गई है उसका यही कारण है। इन्हें अब सम्भालना पड़ेगा। ये जो निगेटिविटी है, टीवी, इंटरनेट, इनसे अपना नाता कुछ समय के लिए बिल्कुल काट दें। क्योंकि इनसे वेव्स भी बहुत बुरी आती हैं। कुछ चीज़ें मैं आपको सजेस्ट करना चाहूँगा। पहली चीज़ कि आप पानी चार्ज करके पीएं, पानी, दूध, जूस जो भी हो उसमें ये संकल्प लेंगी कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। दूसरा अभ्यास आपको कुछ स्वमान चुन लेने चाहिए। और स्वमान की प्रैक्टिस ये सारा दिन कामकाज करते हुए, अपने घर में रहते हुए करती रहें। उससे आपके ब्रेन को एनर्जी मिलती रहेगी। योग अभ्यास के लिए हमारे ब्रेन को एनर्जेटिक होना चाहिए। पर जब ब्रेन वीक है तो स्वमान से उसको एनर्जी मिलती है। ये आपको ध्यान रखना पड़ेगा। बाकी योगाभ्यास के लिए आप ज़्यादा समय न बैठें। पाँच से सात मिनट ठीक है नहीं तो चलते-फिरते कर्म में योग अभ्यास करती रहें। और तीसरी बात, जिसके गुड रिज़ल्ट हम रोज़-रोज़ सुनते रहते हैं, ब्रेन को एनर्जी देना। दोनों हाथ मलते हुए मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ये अभ्यास करके तीन बार आँख बंद करके अपने ब्रेन पर ये दोनों हाथ रख लें, ऐसा एक मिनट करें और दस बार करें। दस मिनट सवेरे और दस मिनट शाम को करें। इसके बहुत गुड रिज़ल्ट मिलेंगे। साथ-साथ आपसे कुछ भी न होता हो तो सवेरे उठकर 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इसके वंडरफुल रिज़ल्ट निकलते हैं। जिसका समाधान ही नहीं सूझता था और मास्टर सर्वशक्तिवान का अभ्यास किया बिल्कुल सबकुछ ठीक हो गया। ये चीज़ अपनाने से मानसिक स्थिति आपकी सुधर जाएगी और ठीक हो जाएगा सबकुछ।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

क्या कभी सोचा... धर्म पिताओं का धर्म क्या था..!!

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

विभिन्न धर्मों का एक गुह्य रहस्य स्पष्ट कर देना चाहते हैं। जिसको न जानने के कारण कुछ धर्म अपने स्वमान में नहीं रहते और बहुत धर्मों को ये पता नहीं है कि उनके धर्म पिता का धर्म क्या था। कई कन्फ्यूज़न हैं। आज हम इन थोड़ी-थोड़ी बातों को ले रहे हैं। एक ये भारत वाले अपने को हिन्दु कहलाते हैं। कुछ लोग अपने को सनातनी कहलाते हैं। भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय हैं हिन्दु धर्म के भी। कोई वैष्णव सम्प्रदाय से है, कोई शैव मत से, कोई आर्य समाज से, जैन धर्म भी है भारत में और भी तीन मुख्य धर्म हैं। बुद्ध धर्म, क्रिश्चियन धर्म, मुस्लिम धर्म, और उनकी शाखाएं भी बहुत हैं। और भी छोटे-छोटे धर्म हैं- यहूदी, पारसी, जैनिज्म भी है।

मैं पूछा करता हूं बहुतों से कि तुम्हारे धर्म पिता का धर्म कौन-सा था? सोचने लगते हैं लोग। उससे पहले तो हमारा धर्म था ही नहीं। क्रिश्चियन धर्म तो था ही नहीं। क्राइस्ट धर्म तो पहले होगा ना। महात्मा बुद्ध थे तो बुद्ध धर्म थोड़े ही था। तो उसका धर्म क्या था? तो पहले मैं स्पष्ट कर रहा हूं कि ये जो सृष्टि का खेल है, ये केवल पाँच हज़ार वर्ष का खेल है। कई शास्त्रों में इसको लाखों वर्ष तक का दिखा दिया है, ऐसा नहीं है। ये 1250वर्ष का ही एक युग है और ये चतुर युग ही पाँच हज़ार वर्ष के हैं। ये रिपीट होता रहता है खेल। ये नहीं कि संसार की आयु पाँच हज़ार साल है। संसार तो अनादि-अविनाशी है। विश्व का ड्रामा अनादि-अविनाशी है, चलता आ रहा है। लेकिन चार युग इसमें पाँच हज़ार वर्ष में पूर्ण हो जाते हैं।

सतयुग से प्रारंभ होता है। तब होता है यहाँ आदि सनातन देवी-देवता धर्म। लोग उसे केवल सनातन धर्म कह देते हैं। हिन्दु धर्म तो इस धर्म में नाम पड़ा ही बाद में है। कई लोग इसको जानते हैं। कई लोग कहते हैं कि हम हिन्दु हैं। अब हिन्दु हैं लेकिन वास्तव में आप सभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हो। इसीलिए हिन्दु लोग मन्दिरों में देवी-देवताओं को बहुत सम्मान देते हैं, पूजा करते हैं। ये पूजा-पाठ और कुछ नहीं ये अपने पूर्वजों को सम्मान अर्पित करना ही तो है। तो हम सभी इस सतयुग में देवी-देवता थे। और ये देवी-देवता धर्म दो युग तक चला। सतयुग और त्रेतायुग। तो फिर क्या हुआ? आप जानते हैं इब्राहिम सबसे पहले आया उन्होंने इस्लाम धर्म की स्थापना की। जैसे हम चर्चा कर रहे थे कि इन धर्म पिताओं का धर्म कौन-सा था। हमारे यहाँ एक कल्प वृक्ष का चित्र है उसमें आप देख सकते हैं कि धर्मों की सभी शाखाएं इस हिन्दु धर्म से ही निकली हैं। जो सतयुग-त्रेता में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। द्वापर से जो हिन्दु कहलाया। महात्मा बुद्ध हिन्दु ही तो थे। एक बौद्ध संघ ही स्थापित किया था शुरू में, धर्म नहीं था। बाद में चलके वो धर्म में परिवर्तित हुआ।

क्राइस्ट भी इसी धर्म के थे, और बाद में उनका धर्म क्रिश्चियन धर्म नाम पड़ा। और इब्राहिम भी इसी धर्म के थे। बाद में सबकुछ बदलता गया। सबके धर्म अलग-अलग हो गये। वास्तव में सभी का मूल ये देवी-देवता धर्म ही है। इसलिए सभी के अन्दर देवत्व है। कई लोग कहते हैं कि पुराने धर्म में बड़ी ही हिंसा है। बड़ी ही नफरत भाव रखते हैं एक-दूसरे के लिए। ये बहुत बड़ी गलती होती है। ये तो सत्य है कि हरेक धर्म वाला अपने धर्म का विस्तार करना चाहेगा। लेकिन मैं आपको एक गुह्य रहस्य और बता दूं कि जब सभी आत्माएं परमधाम में हैं तो सभी धर्मों की आत्माओं के रहने का स्थान वहाँ अलग-अलग है। क्योंकि सभी धर्मों की आत्माओं के मूल संस्कार ही अलग-अलग होते हैं। एक धर्म की आत्मा, दूसरे धर्म की आत्मा में जन्म नहीं लगा सकती। इसलिए यहाँ कोई जबरदस्ती परिवर्तन करते भी हैं धर्म का तो तलवारों के बल पर परिवर्तन हुआ। धन के बल पर परिवर्तन हुआ। तो वो कल्प के अन्त में पुनः अपने मूल धर्म में वापिस आ जाएंगे। आ भी रहे हैं आजकल बहुत सारे।

आप देखेंगे इन सभी धर्मों का काल केवल अढ़ाई हज़ार वर्ष है। तो भला सतयुग-त्रेता जो देवी-देवता धर्म था उसका काल अनंत लाख साल थोड़े ही होगा। उसका भी अढ़ाई हज़ार साल ही था पहले। ये सृष्टि के खेल में बहुत सुन्दर संतुलन है। एक को बहुत कुछ मिल रहा हो और दूसरे को कुछ भी न मिल रहा हो, ऐसा इसमें नहीं होता।

एक रहस्य सबको जान लेना चाहिए कि जब धर्म की स्थापना होती है तो उसके सभी लोगों की स्थिति सतोप्रधान थी फिर वो रजो में आते हैं, फिर तमो में आते हैं, चार स्थितियों से सभी धर्मों को गुज़रना पड़ता है। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो और अब अन्त है। बिल्कुल स्पष्ट रूप से सबको जान लेना चाहिए। कल्प का अन्त है, युग बदलने वाला है। सभी धर्म के लोग अपनी लॉएस्ट स्थिति में पहुंच गये हैं। धर्म जो प्रेम सिखाते थे, धर्म जो सद्भाव सिखाते थे, जो अपनापन सिखाते थे, निःस्वार्थ भावना सिखाते थे, आत्मिक भाव, रूहानी भाव सिखाते थे, वो भेदभाव सिखाने लगे हैं। लड़ाई-झगड़े धर्मों में आ गये हैं। हिंसा प्रबल हो गई है। हर धर्म अपने को बचाने के लिए हिंसक हो जाता है। पर सबको पता होना चाहिए कि किसी धर्म को कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। न धर्म का विस्तार जबरदस्ती किया जा सकता है, बहुतों ने किया है। क्या वो दूसरों के धर्मों को नष्ट कर पाये? क्या उनका इतना विस्तार हो गया कि वही-वही रह गये हों? जैसा कई लोग मानते हैं। क्रिश्चियन ने क्रिश्चियन मिशनरी शुरू की, पर क्या सभी को क्रिश्चियन बना सके? उनका राज था औरंगजेब के समय में, तलवार के बल पर बहुतों को मुस्लिम बना दिया गया। क्या वो सबको मुस्लिम बना पाये? ये सम्भव ही नहीं है। इसीलिए धर्मों का विस्तार करना तो हर धर्म का अपना एक लक्ष्य होता है, उसका कर्त्तव्य होता है और उसमें हिंसा को स्थान देना ये धर्म के सिद्धान्तों के विपरित हो जाता है। धर्म की प्युरिटी के विपरित हो जाता है। इसीलिए हमने कहा कि लॉएस्ट स्टेज, तमोप्रधान स्थिति आ गई हर धर्म की।

तो अब सबको समाप्त होकर रूहों को वापिस अपने धाम चलना है। कयामत का समय नज़दीक आता दिख रहा है। असार उसके सामने नज़र आ रहे हैं। अभी भगवान पुनः आकर सभी धर्मों को पवित्र बनने का संदेश दे रहे हैं और वो कह रहे हैं कि तुम सभी आत्माएं मेरी संतान हो। स्वीकार करें इस सत्य को। चाहे उसे वालिद मानते हैं, गॉड फादर मानते हैं, परमपिता मानते हैं। वो पिता है, वो ही हम सबके ऊपर है। वो सुप्रीम है। उससे कनेक्शन जोड़ कर ही मनुष्य आत्माएं पाप से मुक्त हो सकती हैं। अपवित्रता को नष्ट कर सकती हैं, पावन बन सकती हैं। क्योंकि पावन बनकर ही सबको घर जाना है। जाने का समय आ गया है। तो मैं विशेष करके आदि सनातन देवी-देवता धर्म वालों से बात करूंगा आप सभी संसार के मूल हैं। आप सभी संसार के पूर्वज हैं। आपको सभी की पालना करनी है और कर भी रहे हैं। इसीलिए आपके मन में सभी के लिए प्रेम, सद्भावना, अपनापन, निःस्वार्थ भाव, शांति देने का भाव, सुख देने का भाव, सभी को सम्मान देने का भाव, प्रबल रूप से जागृत करना है। क्योंकि आपके वायब्रेशन्स का प्रवाह सभी धर्मों को पहुंचेगा। आप सभी के पूर्वज हैं और पुनः भगवान आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। क्योंकि धर्म लोप हो गया है। धर्म भी लोएस्ट स्थिति में पहुंच गया है। केवल देवी-देवताओं की पूजा हो रही है। देवत्व लोप हो गया है। तो आइए भगवान से मिलकर हम अपने देवत्व को जागृत करके आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना में सहयोगी बनें।

अम्बिकापुर-छ.ग.। गणतंत्रता दिवस कार्यक्रम के दौरान स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन को उनके उत्कृष्ट कार्य तथा बिहान के तहत नशा मुक्ति कार्यक्रम के लिए प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो भेंट करते हुए माननीय उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा।

बारामती-महा.। महाराष्ट्र के पूर्व उप मुख्यमंत्री और नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी,एनसीपी के नेता अजीत पवार का विमान हादसे में निधन पर उनके निवास स्थान पर ब्रह्माकुमारीज़ अहिल्या नगर सेवाकेन्द्र की सह-संचालिका ब्र.कु. सुप्रभा, ब्र.कु. सोनाली और डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके ने पहुंचकर उनकी पत्नी उप मुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार को सांत्वना दी। तत्पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की।

सोनई-अहिल्यानगर(महा.)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान और उनकी धर्मपत्नी साधना सिंह चौहान से स्नेहभरी मुलाकात कर आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी व डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। साथ हैं ब्र.कु. पांडुरंग गायकवाड़।

पुणे-महा.। भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित, महाराष्ट्र के तीन बार मुख्यमंत्री, केंद्रीय रक्षा और कृषि मंत्री रहे राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष,भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड व अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के भूतपूर्व अध्यक्ष शरद गोविंदराव पवार को परमात्म संदेश देने के पश्चात् आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

रतलाम-गौरव पैलेस(म.प्र.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् परमात्म स्मृति में नगर निगम एमआईसी सदस्य विशाल शर्मा, गहलोत हाईकोर्ट एडवोकेट लोकेंद्र सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मालिया-हाटीना(गुज.)। शिवजयंती पर्व पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् चित्र में सामाजिक कार्यकर्ता महेंद्र गांधी, रिटायर्ड आर्मी ऑफिसर नक्लभारती बापु, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता एवं ब्र.कु. रूपा।

मुंबई-महा.। महाशिवरात्रि अवसर पर बोइसर ईस्ट विराज मैनेजमेंट सेंटर द्वारा आयोजित शिवध्वजारोहण कार्यक्रम के दौरान आमंत्रित मुंबई वीले पार्ले सेंटर से ब्र.कु. दीक्षा बहन, विराज कंपनी के चेयरमैन नीरज राजा कोठारी सहित सीनियर पदाधिकारी तथा अन्य की उपस्थिति रही।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित सामाजिक समरसता कार्यक्रम के दौरान सफाई दीदियों को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. जयंती बहन। साथ हैं विद्याधाम आचार्य प्रकाश जी जोशी, डॉ.अनूप गुप्ता, ब्र.कु. सुजाता तथा अन्य।

बारडोली-गुज.। शिवरात्रि कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. अरुणा बहन, ब्र.कु. जयश्री, दी कॉपरेटिव बैंक डायरेक्टर जितेन्द्र वांसदा, नगरपालिका प्रमुख धर्मेश, बैंक के अजय जोशी एवं बिल्डर परेश जी।

शुजालपुर-म.प्र.। त्रिमूर्ति शिव अवतरण महोत्सव पर स्थानीय जटाशंकर मंदिर में आयोजित कार्यक्रम के शुभारम्भ पश्चात् एसडीओपी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला। साथ हैं ब्र.कु. जितेंद्र अग्रवाल।

52वें राष्ट्रीय माइंड बॉडी मेडिसिन के तहत...

केयरिंग, कंपैशन एंड कम्युनिकेशन विषय पर डॉक्टर्स महासम्मेलन

ओ.आर.सी. गुरुग्राम(हरियाणा)। भारत सरकार के केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने ओम शांति रिट्रीट सेंटर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा 52वें राष्ट्रीय माइंड बॉडी मेडिसिन में 'केयरिंग, कंपैशन एंड कम्युनिकेशन' विषय पर कहा कि जब आत्मा का परमात्मा से संबंध स्थापित हो जाता है तो शब्दों का महत्व कम हो जाता है। परमात्मा एक ऐसा बिंदु है जिस तक पहुंचने का सभी प्रयास कर रहे हैं। यहाँ आने पर मुझे जो अनुभव हुआ, शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। माननीय मंत्री ने कहा कि भगवान ने डॉक्टर्स को विशेष शक्तियां दी हैं। कोविड के समय डॉक्टर्स की भूमिका बहुत विशेष रही है। डॉक्टर्स ने स्वयं की परवाह किए बिना दूसरों की सेवा में अपना सारा समय दिया। जीवन का लक्ष्य किसी पद पर पहुंचना नहीं बल्कि जीवन का असली लक्ष्य दूसरों के जीवन में खुशियाँ और सकारात्मकता लाना होना चाहिए। डॉ. योगिता स्वरूप,वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने कहा कि सबसे पहले मन को हील करने की जरूरत है। मन की हीलिंग ही शरीर को भी हील करती है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में इस प्रकार का वातावरण मन को हील करता है। ओआरसी की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि सबसे पहले स्वयं की केयर जरूरी है। केयर सिर्फ शरीर की नहीं बल्कि मन की भी है। मन को पॉज़िटिव रखना ही मन की केयर है। जब हम स्वयं की केयर करेंगे तो हमारे आस-पास के लोग भी स्वयं को सुरक्षित अनुभव करेंगे। ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि यह विश्व में एकमात्र ऐसा संस्थान है, जिसका संचालन महिलाएं करती हैं। वर्तमान समय की चुनौतियां जिस प्रकार का तनाव पैदा कर रही हैं, उससे डॉक्टर्स भी अछूते नहीं हैं। सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए योग का विशेष महत्त्व है। मेडिसिन के साथ मेडिटेशन जरूरी है। कार्यक्रम में संस्थान के मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा चलाए जा रहे नशा मुक्ति अभियान ने देशभर के साढ़े चार करोड़ से भी अधिक लोगों को जागृत किया है। कार्यक्रम में जीबी पंत हॉस्पिटल के हृदय रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. मोहित गुप्ता ने भी अपने विचार रखे। दिल्ली,लॉरेंस रोड सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी ने राजयोग का गहन अनुभव कराया। मंच संचालन जीबी पंत हॉस्पिटल के पैथोलॉजी विभाग की प्रोफेसर डॉ. रीना तोमर ने किया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में लगभग 600 से भी अधिक चिकित्सकों एवं शिक्षाविदों ने शिरकत की।

वेद और पुराणों के प्रणेता शिव : महामंडलेश्वर बंसी पुरी जी

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र में महाशिवरात्रि पर्व 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव अत्यंत श्रद्धा, उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर श्री बंसी पुरी जी महाराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर शिव लीलाओं का गान किया जाना अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि संपूर्ण ब्रह्मांड शिव में समाहित है– ज्ञान, वैराग्य, वेद और पुराणों के प्रणेता शिव हैं। शिव की कृपा के बिना कुछ भी पाना असंभव है। ब्र.कु. मधु ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का संक्षिप्त परिचय दिया। सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज दीदी ने कहा कि परमात्मा शिव अज्ञानता का पर्दा हटाने के लिए अवतरित होते हैं और राजयोग के माध्यम से मन-बुद्धि को एकाग्र कर परमात्मा से जुड़ना ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में सिखाया जाता है। राधा बहन, शकुंतला बहन, मेहर सिंह मलिक,एडवोकेट, एडवोकेट महेंद्र सिंह तंवर,अखिल भारतीय क्षेत्रीय सभा अध्यक्ष, डॉ. आर.के. आग्रवाल,एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र, पंडित जय नारायण शर्मा, दीनानाथ अरोड़ा, धर्मवीर सिंह,जिंदल हाउस, पंडित पवन शर्मा,प्रधान,ब्राह्मण सभा, धीरज गुलाटी, धर्मपाल गुप्ता,पूर्व प्रधान,अनाज मंडी, गुरफतेह सिंह कंग, संजय जी जिला संघ प्रमुख सहित अनेक गणमान्य अतिथि एवं प्रबुद्धजनों ने दीप प्रज्वलित कर और शिव ध्वजारोहण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। गौरव, शैलजा, राजकुमार, पार्थ, अग्रिम एवं तन्वी ने लघु नाटिका द्वारा वर्तमान समय में फैले अंधविश्वास का पर्दाफाश करते हुए स्पष्ट किया कि शिव परमात्मा निराकार ज्योति-बिंदु है, जबकि शंकर देहधारी देव हैं– इसी कारण शिव के लिए परमात्मा नमः और शंकर के लिए देवाय नमः कहा जाता है। ब्र.कु. शकुंतला ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

करुणा और समर्पण भाव से समाज को मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य कर रही ब्रह्माकुमारीज़ः आशुतोश महाराज

देहरादून-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज़ के सुभाष नगर सेवाकेन्द्र में 'ब्रह्माकुमारी संस्था का नवदशकोत्सव' के अवसर पर आदि शंकराचार्य वैदिक वेलनेस फाउंडेशन के संस्थापक अंतर्राष्ट्रीय संत स्वामी योगीराज योगी आशुतोष जी महाराज ने संस्थान की महिमा करते हुए कहा कि पूर्व से पश्चिम तक, केवल भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में यदि कोई शोषित, पीड़ित या वंचित है, तो उसे करुणा, दया और समर्पण भाव से अपनाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है। उन्होंने कहा कि यहाँ केवल राजयोग ही नहीं, बल्कि सभी प्रकार के योग एक ही छत्रछाया में उपलब्ध हैं। यह संस्था 140 से अधिक देशों में संकल्पों की शक्ति द्वारा विश्वकल्याण की सेवा कर रही है। तत्पश्चात आपदा प्रभाग के सचिव ज्योतिर्मय त्रिपाठी ने संस्था से जुड़ने के अपने अनुभव साझा किए तथा महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं दी। ओम शांति रिट्रीट सेंटर,गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने महाशिवरात्रि की बधाई देते हुए कहा कि इस शिवरात्रि में 'साइलेंस पॉवर' के माध्यम से मन्सा-संकल्पों को शक्तिशाली बनाकर अपने मन-मंदिर को सच्चा शिवालय बनाएं, जहाँ परमात्मा का वास हो। उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी ने भी अपने विचार रखे। कुमारी पावनी द्वारा सुंदर स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। कुमारी स्वाति एवं कुमारी नताशा द्वारा ब्रह्माकुमारी संस्था की 90वर्षों की यात्रा को संवाद द्वारा प्रस्तुत किया गया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. सुशील द्वारा किया गया।

अज्ञान अंधकार को मिटाने के लिए परमात्मा होते अवतरित

ऋषिकेश-उत्तराखंड। कार्यक्रम का विधिवत उद्‌घाटन आदरणीय संत रवि शास्त्री,तुलसी मानस मन्दिर,स्वामी श्री रामेश्वर गिरि जी महाराज,पंच दशनाम जूना अखाड़ा, स्वामी श्री रघुवीर गिरि जी महाराज,निरंजन अखाड़ा, योगीराज योगी आशुतोष महाराज जी,आदि वैलनेस सेन्टर, स्वामी शिवानन्द महाराज, स्वामी आलोक हरिहर गिरि जी, माननीय शंभू पासवान, मेयर नगर निगम ऋषिकेश एवं राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. मीना दीदी व ऋषिकेश सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आरती दीदी द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया गया। दीप प्रज्वलन ने ज्ञान, शांति और आत्मिक जागृति का संदेश पूरे सभागार में प्रकाशित किया। महंत रवि शास्त्री जी ने सर्वप्रथम तीनों पावन उत्सवों की सभी को हार्दिक बधाई दी। आप सभी सौभाग्यशाली हैं जो प्रतिदिन परमात्मा के सत्संग का लाभ प्राप्त करते हैं। क्योंकि अंत समय में साथ जाने वाली एकमात्र धरोहर परमात्मा का सुमिरन ही है। परम श्रद्धेय स्वामी शिवानंद जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में बताया कि संसार में कोई भी व्यक्ति दुःख नहीं मांगता, सिवाए माता कुंती के। सुख और दुःख दोनों ही नियति का हिस्सा हैं। परमात्मा हमसे दूर नहीं है, उसे देखने के लिए केवल अहंकार रूपी पर्दे को अपनी आँखों से हटाना आवश्यक है। अपने उद्‌बोधन में ब्र.कु. मंजू दीदी ने महाशिवरात्रि के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शिव कोई देहधारी देवता नहीं, बल्कि ज्योति बिंदु स्वरूप, सर्वशक्तिवान, निराकार परमपिता हैं, जो कलियुग के अंधकार में ज्ञान का प्रकाश देने अवतरित होते हैं। योगीराज योगी आशुतोष महाराज जी ने अपने दिव्य उद्‌बोधन में कहा कि यह संस्था परिवारों को जोड़ने तथा उन्हें पवित्र बनाने का सतत कार्य कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि शत-प्रतिशत शुद्ध और सच्चे संकल्प सदैव पूर्ण होते हैं। इसके पश्चात् ब्र.कु. आरती दीदी ने बताया कि शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, धतूरा आदि चढ़ाने का वास्तविक अर्थ बाहरी पूजा नहीं, बल्कि अपनी बुराइयों, विकारों और नकारात्मक संस्कारों का त्याग कर उन्हें परमात्मा को समर्पित करना है। मंच का संचालन ब्र.कु. सुशील ने किया।

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26. Posting on 23th TO 24th Each Month.
स्वामी - ब्रह्म ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर ... द्वारा कैपिटल ऑफसेट, E 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शान्तिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org